अध्याय-३

-: हिन्दी के सामाजिक सद्भाव पर आधारित कहानी एवं उपन्यास :-

हिन्दी के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना पर आधारित उपन्यासों को इस अध्याय में स्पष्ट करने से पूर्व सामाजिक उपन्यासों में व्याप्त सद्भावना पर एक विहंगम दृष्टि इस प्रकार है, जिनका स्पष्टीकरण तीन युगों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है जो कि निम्न रूप से हैं:-

१:- पूर्व प्रेमचन्द युगीन कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना ।

२:- प्रेमचन्द युगीन कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना ।

३:- प्रेमचंदोत्तर युगीन कथा -साहित्य में सामाजिक सद्भावना।

१:- पूर्व प्रेमचन्द युगीन कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना :- प्रेमचंद से पूर्व कई साहित्य की रचनाएं सुप्रसिद्ध हैं जो सामाजिक सद्भावना को अपने अंदर संजोए हुए हैं। इस युग में गद्य और पद्य के दो रूप माने गए हैं। 'गद्य' शब्द का अर्थ है 'कही जाने वाली बात' मनुष्य ने जब से बोलना सीखा गद्य तभी अस्तित्व में आ गया था, लेकिन प्राचीन उपलब्ध साहित्य में पद्य पहले मिलता है जबकि गद्य के उदाहरण बहुत ही विरलता से जान पड़ते हैं अथवा गद्य की प्रचुरता आधुनिक हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। कदाचित्त इसलिए हिन्दी आधुनिक काल को गद्य युग कहा जाता है तथा आधुनिक युग में जिस गति से गद्य साहित्य की रचना हुई है उतनी पद्य की कदापि नहीं हुई।

हिन्दी कथा- साहित्य का आरम्भ सन् १८०० ई. के लगभग माना जाता है। इस समय तक कहानी और उपन्यास का अंतर स्पष्ट नहीं हो पाया था और उस समय की कहानी को उपन्यास का ही अंग माना जाता था तथा भारतेंदु से पूर्व का कथा-साहित्य पौराणिक आख्यानों पर ही वर्णित रहा है तथा इस युग का लेखक रागात्मक कल्पनाओं से प्रेरित है एवं भारतेंदु से पूर्व (१८०० ई. से १८५८ ई.) हिन्दी गद्य साहित्य में हमारे लिए तीन महत्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध हैं। पहला लल्लूलाल का 'प्रेमसागर' (सन् १८०३ ई.) दूसरा सदल मिश्र का ' नासिकेतोपाख्यान' (सन् १८०३ ई.) और तीसरा सैयद इंशा अल्लाह खां का ' रानी केतकी की कहानी ' (सन् १८०० ई. से सन् १८१० ई. के बीच) 'नासिकेतोपाख्यान' तथा 'प्रेमसागर' आदि ये ग्रंथ पौराणिक आधार पर लिखे गए ग्रंथ हैं। इसलिए इनके सभी पात्र परम्परागत सांस्कृतिक पुराणों के अनुरूप हैं तथा रानी केतकी की कहानी को एक मौलिक रचना माना जाता है इसके प्रायः सभी पात्र उच्च मध्यमवर्गीय के माने जाते हैं।

रानी केतकी की कहानी के पश्चात् पण्डित श्रीलाल विरचित धर्मसिंह का 'वृतांत' ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल की अविस्मरणीय गद्य कथा को दर्शाता है। जिसमें एक सत्यनिष्ठ जमींदार की यथार्थवादी कहानी का विवेचन है तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद इसकी सुप्रसिद्ध विशेषता है। जो कि अपने आप में सामाजिक सद्भावना को संजोए हुए है।

" जितने गवैये, बजवैए, भाड - भगतिए रहसधारी और संगीत पर नाचने वाले थे, सबको कह दिया, जिस-जिस गांव में जहां हो अपने - अपने ठिकानों से निकलकर अच्छे - अच्छे बिछोने बिछा कर गाते - नाचते धूम - मचाते कूदते रहा करें।"^१

पण्डित श्री लाल कृत 'सूरजपुर की कहानी' भाग-१ भी तत्कालीन युग की एक लोकप्रिय कहानियों में से है। इसमें यथार्थवाद की एक स्वच्छ धारा को बहुत ही सुगमता से प्रवाहित किया गया है। इसके द्वितीय भाग के रचनाकार मुंशी नज़म अलादीन थे। राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द प्रणीत ' वीरसिंह का वृतांत ' (प्रथम संस्करण १८५५ ई.) ' वामा मनरंजन' (प्रथम संस्करण १८५६ ई.) ' लडकों की कहानी' (द्वितीय संस्करण १८६१ ई.) आदि ये सभी कथाएं पूर्व भारतेंदु युगीन की सुप्रसिद्ध मौलिक गद्य-कथाएं हैं। इस युग अर्थात् "पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में केवल दो कहानियाँ लिखी गईं जिनमें से एक राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की उपदेशात्मक कहानी 'राजाभोज का स्वप्न' और दूसरी भारतेंदु हरिश्चंद्र की हास्यरस प्रधान कहानी ' अद्भुत अपूर्व सपना '। इसके बाद यद्यपि उपन्यास अनेक लिखे गए लेकिन कहानियों की रचना बीसवीं शताब्दी में आकर की गई। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हरिश्चंद्र जी से पूर्व तक का हिंदी कथा-साहित्य उपन्यास और कहानी किसी भी क्षेत्र में नहीं आ सकता क्योंकि न इसमें कहानी एवं उपन्यास की कोई शिल्प विधि थी और न ही कोई भाव विशेष।"^२

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध को हिन्दी गद्य साहित्य के आरंभिक विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। हिन्दी उपन्यासों का उद्भव इसी दौरान माना जाता है। इस काल में आते - आते इस समय के उपन्यासों ने देश में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सद्भावना के उद्भव तथा विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर दिया था तथा राजनीतिक सद्भावना की दृष्टि से यह काल अपना एक विशेष महत्व रखता है। हिन्दी साहित्य के उपन्यासों के स्वरूप का निर्धारण एवं विकास करने में प्रेमचंद जी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए विद्वानों ने हिन्दी उपन्यासों के वर्गीकरण में प्रेमचंद जी को ही आधार माना है तथा प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासों को पूर्व - प्रेमचंद उपन्यास कह कर संबोधित करना केवल काल का ही नहीं बल्कि विकास के सोपानों का और उन सोपानों की कुछ विशिष्ट धाराओं का द्योतन करता है।

हिन्दी उपन्यासों की विकास यात्रा को सुविधा की दृष्टि से चार युगों में विभाजित किया गया है। जिसमें सामाजिक सद्भावना का समावेश भरपूर मात्रा में प्राप्त होता है।

★ पूर्व प्रेमचंद युग (सन् १८८२ ई. से सन् १९१८ ई. तक)

★ प्रेमचंद युग (सन् १९१८ ई. से सन् १९३६ ई. तक)

★ प्रेमचंदोत्तर युग (सन् १९३६ ई. से सन् १९६० ई. तक)

★ साठोत्तर युग (सन् १९६० से अब तक)

हिन्दी में सर्वप्रथम अनूदित उपन्यास राबिन्सन क्रूसो का इतिहास माना गया है। इसका सर्वप्रथम प्रकाशन सन् १८६० ई. में हुआ था। इन अंग्रेजी उपन्यासकारों डेनियल डिफो के उपन्यास एवम् राबिंसन -क्रूसो का हिन्दी अनुवाद पण्डित बदरीलाल जी द्वारा किया गया था तदंतर अनेक हिन्दीतर उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद इनके पश्चात् प्रकाशित होने आरम्भ हुए तथा हिन्दी में मौलिक उपन्यासों से पूर्व अनूदित उपन्यास ही आए जिनमें सामाजिक सद्भावों को ही समाहित किया गया। जिनका तथ्यात्मक पुष्टि आगे के अनुच्छेदों में की जाएगी।

प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी उपन्यासों में यथार्थवाद की अपने-आपमें एक विशिष्ट रूप की परम्परा मानी जाती थी। इस परम्परा का आरंभ सन् १८७० ई. में पण्डित गौरीदत्त कृत मौलिक उपन्यास ' देवरानी जेठानी की कहानी ' उपन्यास से हुआ तथा मेरठ के मुंशी इश्वरी प्रसाद और मुंशी कल्याण राय ने सन् १८७२ ई. में 'वामाशिक्षक' अर्थात् ' दो भाई और चार बहनों की कहानी नामक उपन्यास का लेखन किया जो आज के युग में भी बहुत ही प्रचलित तथा पाठकों के मन को लुभाने वाली रचना है। यह एक ऐसा साहित्य है जो कि स्त्री शिक्षा प्रधान मौलिक उपन्यास के रूप में जन्मा है तथा नवोदित शहरी मध्यम वर्ग के सामाजिक जीवन पर आधारित यह उपन्यास तत्कालीन भारतीय समाज को एक सम्पूर्ण दर्पण की तरह प्रदर्शित करता हुआ नजर आता है।

" जब वह सांयकाल को सारे दिन का थका हारा घर आता, नून तेल का झीखना ले बैठी। कभी कहती मुझे गहना बना दे, रोती झीकती लड़की भिड़ती कहती कि फलाने की बहू को देख, गहने से लद रही है उसका मालिक नित नई चीजें लावे है। मेरे तो इस घर में आके भाग फूट गए। वह कहता, अरी भगवान, जाने भगवान रोटियों की क्यों कर गुजारा कर रहे हैं तुझे गहने-पाते की सूझ रही है। " ³

सन् १८७७ ई. में पण्डित श्रद्धा राम फिल्लौरी द्वारा विरचित तथासन् १८८७ ई. में प्रकाशित ' भाग्यवती ' उपन्यास स्त्री शिक्षा के लिए रचा गया था। यदि हम ' देवरानी जेठानी की कहानी ', ' वामाशिक्षक ' तथा ' भाग्यवती ' एक साथ पढ़ें तो सन् १८७० ई. के दशक में हमारे परम्परागत समाज में जिस रीति से नए शहरी मध्यम वर्ग का उदय हुआ उसकी वास्तविक झलक हमारी नज़रों के समक्ष प्रस्तुत हो जाती है।

संतान का दुःख ऐसा नहीं होता जो समझाने से जाता रहे और उनमें भी लड़कों का तो सब जानते हैं कि जितने बालक किसी के मरते हैं उतने ही छेद मां - बाप के हृदय में हो जाते हैं अब तुलसी राम को इस लड़के के दुःख ने ऐसा सताया कि उनको आँखों से भी कम सूझने लगा। तब लाचार होकर तिहाई पिनसन तेरह रूपए पाँच आने लेकर चारपाई ले ली और घर बैठे इसी दुख में तुलसी राम और राधा ने सारी उम्र तय की और फिर संतान का मुंह देखना प्राप्त न हुआ।^१

'सुंदर' एक मौलिक यथार्थवादी उपन्यास है। यह ' परीक्षा गुरु ' से पूर्व का साहित्य है। इस उपन्यास में मद्य निषेध, स्त्री सुधार, देशभक्ति, नवजागरण, वेश्यावृत्ति, बाल विवाह, बाल वैधव्य, रोजगार के प्रति उन्नमुख शिक्षा, विवाह के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण आदि विषयों का बहुत ही हृदय विदारक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक - जागरूकता का यह उपन्यास पूर्व - प्रेमचंद युगीन यथार्थवाद का बहुत ही उच्च कोटि का उदाहरण है।

राधाकृष्ण दास ने सन् १८८१ ई. में भारतेंदु हरिश्चंद के परामर्श तथा मार्गदर्शन से मात्र सोलह वर्ष की आयु में ही ' निस्सहाय हिन्दू ' उपन्यास को एक लेखन रूप प्रदान किया जोसन् १८९० ई. में पहली बार हुआ। इसकी रचना का मुख्य उद्देश्य गोवध निवारण था। इसमें हिन्दू समाज ही नहीं बल्कि मुस्लिम समाज का भी बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से प्रस्तुतीकरण किया गया है। इसके पूर्व के उपन्यासों में मुस्लिम समाज का चित्रण नहीं किया गया था।

लज्जाराम मेहता जी ने भी इस युग में अपने उपन्यासों में सामाजिक सद्भावना को स्थान देते हुए रचना की है। ' आदर्श हिन्दू ' की प्रियंवदा की भांति ' सुशीला विधवा ' में सुशीला पर्दे का समर्थन करती हुई कहती है - " मेरी समझ में पर्दा प्रणाली अच्छी है जो लोग पर्दा प्रणाली की निंदा करते हैं वे भूलते हैं झक मारते हैं। पर्दे का प्रयोजन यह नहीं है कि स्त्रियों को सात ताले में बंद रखना चाहिए, इसका मतलब यही है कि उन्हें ऐसे कुकर्म करने का अवसर न देना चाहिए।"^२

लाला श्रीनिवास दास जी द्वारा रचित ' परीक्षा गुरु ' उपन्यास की धारा में एक ऐसा क्रांतिकारी उपन्यास है जो कि आलोच्य युग में अपनी एक अलग ही पहचान बनाए हुए है । इसका द्वितीय संस्करणसन् १८८४ ई. में प्रकाशित किया गया तथा पहली बार आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने सन् १९२९ ई. में हिन्दी शब्द सागर की प्रस्तावना में माना था कि अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास हिन्दी में लाला श्री निवासदास का ' परक्षागुरु' ही सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ है।

लाला श्रीनिवासदास को ही प्रथम उपन्यासकार के रूप में माना जाता हैं, जिन्होंने हिन्दी साहित्य मे पाठकों तथा रचनाकारों को एक नया मार्ग दिखलाया एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संवत् १९३४ ई. में प्रकाशित श्रद्धा राम फिल्लौरी के 'भाग्यवती' नामक सामाजिक - उपन्यास का केवल उल्लेख किया है ।

" विद्या बन्धु विदेश में, विद्या विपत सहाय ।

जो नारी विद्यावती सो कैसे दुख पाय ॥

राज भोग सुख रूप धन विपत्त समैदज जाह।

इस विद्या विपता समय, तजे न नर की बाँह।।"^६

हिन्दी का प्रथम उपन्यास किसे स्वीकार किया जाए यह एक विवादास्पद प्रश्न वर्तमान समय में भी अब तक बना हुआ है। विद्वानों ने अपने अपने ढंग से लाला श्री निवासदास कृत ' परीक्षा गुरु ', इंशाअल्लाह खां की ' रानी केतकी की कहानी ' और श्रद्धा राम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास सिद्ध करने का पूर्ण रूपेण प्रयास किया है तथा अधिकतर विद्वानों ने सन् १८८२ ई. में प्रकाशित 'परीक्षा गुरु' को ही हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है क्योंकि यह ही अंग्रेजी ढंग का प्रथम उपन्यास है। जिसमें सामाजिक सद्भावना का बड़ा ही मार्मिक रूप से वर्णन किया गया है।

" मेरे मिजाज का तो इस समय कोसों पता नहीं लगता परंतु उसको ठिकाने लाना आपके हाथ है । मिस्टर रसल ने मदन मोहन के कुशल प्रश्न पर कहा--जो आफत एकाएक इस समय मेरे सिर पर आ पड़ी है उसको आप अच्छी तरह जानते हैं । इस कठिन समय में आपके सिवाय मेरा सहायक कोई नहीं है आप चाहे तो दम भर में मेरा बेड़ा पार लगा सकते हैं नहीं, तो मैं इस तूफान में गलत हो चुका ।"^७

हिन्दी में प्रेमचंद-पूर्व उपन्यास की प्रसिद्धि के दो प्रमुख आधार माने जाते हैं-- एक नीतिपरक तथा दूसरा मनोरंजनपरक। इन सभी उपन्यासों में तिलिस्म, ऐयारी, एवं जासूसी को समाहित किया गया था जो की शुद्ध रूप से सामाजिक सद्भावना तथा मनोरंजन की प्रवृत्ति पर आधारित थे। इस युग में पूर्ण रूप से ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना बहुत कम हुई थी। परंतु इस दौरान जितने भी उपन्यासों की रचना की गई वे उपन्यास उपदेश प्रधान और सुधारवादी उपन्यास अवश्य थे। इनमें से कुछ उपन्यास ऐसे भी थे जो कि सनातन धर्म की परम्परा को पोषक तत्व प्रदान करते थे और कुछ उपन्यास ऐसे भी थे जो नवीन बौद्धिक जागरण के समर्थक तथा नए सुधारों को सहयोग दे रहे थे।

इस युग के पश्चात् भारतेंदु युग जीवन की नवीन परिस्थितियों एवं नूतन चेतना को लेकर साहित्य जगत में अवतरित हुआ जिसने अपने आगमन से कथा साहित्य जगत में अपनी एक अलग ही पहचान बनानी आरम्भ की। इस युग की रचनाओं में रूढ़िवादिता का भरपूर विरोध किया गया है तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रेम को दर्शाया गया है।

इस युग के साहित्यकारों के साहित्य का मूल विषय राष्ट्रीयता के प्रति आकर्षण, धर्मनिष्ठता, और सामाजिक विकारों का उल्लेख करना था तथा प्रेमचंद - पूर्व हिन्दी उपन्यास में भारतीय समाज कई रूपों में परिवर्तित होता दिखाई देता है जो की सर्वविदित सामाजिक कुरीतियों के रूप में प्रतिबिंबित होता है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक कारणों से जनता की सामाजिक दशा, नैतिक भावना, धार्मिक विश्वास, और मानव मूल्यों में हो रहे सामाजिक बदलावों के फलस्वरूप नई - नई परिस्थितियों का जन्म हुआ जिनका प्रभाव इस युग के हिन्दी उपन्यासों पर भी देखा जाता है।

इस युग के उपन्यासकार श्रद्धाराम फिल्लौरी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, देवकी नंदन खत्री, श्री निवसदास, लज्जाराम मेहता, अयोध्या सिंघ उपाध्याय हरिऔध, किशोरलाल गोस्वामी, गोपाल राम गहमरी और बृजनंदन सहाय आदि अनेक प्रमुख तथा गौण साहित्यकारों की साहित्यिक कृतियों में सामाजिक समस्याओं का बहुत ही मार्मिक वर्णन है।

फिल्लौरी जी ने एक ही उपन्यास 'भाग्यवती' की रचना की परन्तु इस रचना में इन्होंने इतने पात्रों को समाहित किया है कि जिससे इनकी ये रचना इस युग की एक अलग प्रकार की पात्रों से भरी हुई रचना प्रतीत होती है। इसमें इन्होंने दो दर्जन मुख्य एवं गौण पात्रों के मध्यम से अपने समाज के प्रति सामाजिक सद्भावना तथा सामाजिक परिस्थितियों का पूरा चित्रण प्रस्तुत किया है। इनकी इस रचना के अधिकांश पात्र पुराने विचारों वाले पात्र हैं लेकिन इनकी सहानुभूति नए सुधारवादी विचारों के पोषक पात्रों के साथ उभरकर पाठक के सामने प्रस्तुत होती है। इस उपन्यास

में इन्होंने नारी समस्या के साथ ही साथ बाल विवाह, दहेज प्रथा, प्रदर्शन प्रियता, संयुक्त परिवार आदि जैसी सामाजिक समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया है। सामाजिक कुरीति तथा बाल - विवाह का विरोध करते हुए उमादत्त अपनी पत्नी से कहते हैं -

" सुनो! विवाह उस समय करना चाहिए जब बालक आप ही स्त्री का भूखा हो। जिसका छोटी अवस्था में विवाह हो जाए उसका स्त्री में अत्यंत प्रेम कभी नहीं हो सकता।"^८

विवाह का यही नियम कन्या के लिए भी उपयुक्त समझना चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार बालक की छोटी अवस्था में उसे प्रेम तथा विवाह का पूर्ण अर्थ समझने का ज्ञान नहीं होता उसी प्रकार कन्या को भी उसकी छोटी अवस्था में इसका ज्ञान नहीं होता।

बाल-विवाह जैसी कुप्रथा के कारण ही समाज में बाल विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और उसके क्या कुपरिणाम होते थे इसके कई चित्र इनके भाग्यवती उपन्यास में मिलते हैं। "सेठ राम रत्न ने सात साल की कन्या को ब्याहा जो दो वर्ष बाद ही विधवा हो गई और वह माता - पिता की प्रतिष्ठा को खाक में मिला के किसी कहार के साथ अपने घर से भाग निकलती है।"^९ जिस आधार पर इस युग में सामाजिक कुप्रथा को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

इनके ऊपर वर्णित साहित्य में विवाह में होने वाले अपव्यय के क्या - क्या कुपरिणाम होते हैं इससे संबंधित भी कई दृष्टांत इनकी इस रचना में पाठक को देखने के लिए मिल जाते हैं। "पण्डित उमादत्त की गली में छजमल ने अपने सामर्थ्य से बढ़कर पाँच सहस्र रुपया अपनी कन्या के विवाह में लगा दिया था और अब वो देनदार होकर देश - विदेश मारा - मारा फिरता रहा और छोटे लाला ने उससे भी अधिक रुपए लगाए जिसके कारण इसे अपने बाप - दादा के बनवाए मन्दिर बेच देने पड़े।"^{१०}

'भाग्यवती' में स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए लालमणि की मां कहती है - "मेरी समझ में वे लोग बड़े मूर्ख हैं जो अपने लड़के - लड़की को विद्या से हीन रखते हैं तथा परिवार में पुत्र को कन्या से अधिक महत्त्व देते हैं।"^{११} इस रचना में पुत्रों को पुत्रियों की तुलना में अधिक महत्त्व दिए जाने वाले रूढ़िगत विश्वास का खंडन किया गया है जो की उस समय के सामाजिक रूप को व्याख्यायित करता है।

इस प्रकार तत्कालीन मध्यमवर्गीय समाज में जितनी भी संभावित समस्याएं हैं, उन सभी का फिल्लौरी जी ने किसी ना किसी रूप में अपनी रचना में वर्णन करने का बहुत ही सफल प्रयास किया है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र जी द्वारा लिखित ' पूर्णप्रकश और चंद्रप्रभा ' उपन्यास भी सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है। इन्होंने यह उपन्यास एक मराठी रचना से प्रेरित होकर रचा है। इस रचना में वृद्ध विवाह जैसी कुप्रथा का पुरजोर विरोध करते हुए स्त्री शिक्षा का सम्पूर्ण रूप से समर्थन किया गया है। भारतेंदु जी ने एक कहानी - ' कुछ आप बीती कुछ जग बीती ' में मध्यम वर्ग की चाटुकारिता एवं प्रदर्शन प्रियता का विशेष रूप से बहुत ही सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

मध्यम वर्गीय समाज के विस्तृत अध्ययन की दृष्टि से श्रीनिवासदास का 'परीक्षागुरू ' को हम प्रथम उपन्यास मान सकते हैं। प्रेमचंद - पूर्ववर्ती युग का यह उपन्यास न केवल अपने युग के लिए बल्कि उपन्यास की विकसित होती हुई धारा का भी एक प्रेरणादायक स्रोत माना जाता रहा है। इन्होंने इस उपन्यास में मध्यमवर्ग की झूठी सम्मान भावना, चाटुकारिता, अकर्मण्यता, विदेशी सभ्यता की दासता, आर्थिक विषमता, बेकारी, तथा शिक्षा की सोचनीय स्थिति आदि समस्याओं का बहुत ही हृदयविदारक चित्रण प्रस्तुत किया है। जिसमें सामाजिक सद्भावना के रूपों को स्पष्ट रूप देखा जा सकता है।

मास्टर शंभू दयाल ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा है कि:- " मुझे तो यह बातें मनः कल्पित मालूम होती हैं क्योंकि संसार के बर्ताव से इनकी कुछ भी सुध नहीं मिलती संसार में धनवान, कुपढ़, दरिद्र, पंडित, पापी-सुखी, धर्मात्मा-दुखी, असावधान-अधिकारी, सावधान-आज्ञाकारी भी देखने को मिलते हैं ।"^{१२}

बालकृष्ण भट्ट जी द्वारा रचित ' नूतन ब्रह्मचारी ' एवं 'सौ अजान एक सुजान' को सामाजिक सद्भावना के उपन्यासों की श्रेणी में हम रख सकते हैं। इनके द्वारा रचित 'नूतन ब्रह्मचारी' एक आदर्शपरक सुधारवादी उपन्यास है जिसमें नायक विनायक के चरित्र बल से डाकुओं की प्रवृत्ति में सुधार आने की कथा का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में समाज एवम् युग चित्रण बहुत ही कम जान पड़ते है और इसमें स्त्री पात्रों का भी अभाव देखा जा सकता है।

किशोरी लाल गोस्वामी जी पुरुषों की बहु विवाह प्रथा का समर्थन करते हैं। 'कनक कुसुम वा मस्तानी' उपन्यास में नायक बाजीराव की पत्नी काशीबाई. बाजीराव और मस्तानी की प्रेम को सहज स्वीकृति प्रदान करते हुए बाजीराव से कहती है कि - "लीजिए अब व्यर्थ के सोच-विचारों को छोड़िए और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस गोमती देवी समान सुशीला एवं कुल बाला को ग्रहण कीजिए !"^{१३}

जगनमोहन सिंघ जी का ' श्यामा स्वप्न ' भी एक सामाजिक उपन्यास है। जिसमें काल्पनिक कहानी का आधार होते हुए भी 'ब्राह्मण कुमारी श्यामा ' और ' क्षत्रिय कुमार श्यामा ' सुंदर के प्रणय संबंध की संभावना की ओर सांकेतिक बिंदु प्रदान करते हुए नव्य समाज की नवीन मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मैंने फिर वही कहा, " यदि तू प्रसन्न है तो मेरी वंदना की विनय पूरी कर - श्याम सुंदर का पता बता दे और श्याम सुंदर को श्यामा से मिला दे।" चंडी हंसी और बोली -" आँख बंद कर मैं तुझे क्षण भर के लिए श्यामासुंदर को दिखा दूंगी पर चिंता ना कर श्यामसुंदर कुशलतापूर्वक द्वीपांतर में है। "१४

लज्जाराम शर्मा के उपन्यासों में नई शिक्षा, नवीन आदर्श , पाश्चात्य प्रभावों की पुरजोर निन्दा की गई है तथा सती प्रथा, पर्दा- प्रथा, अशिक्षा जैसी कुप्रथाओं आदि का इन्होंने समर्थन किया है। ' सुशीला विधवा ' में मध्यमवर्ग की रूढ़िवादिता और परम्पराओं के समर्थन का जो चित्र हम पाठकों को प्राप्त होता है उसका विशेष कारण लेखक की सनातन धर्म की ओर आसक्ति है। सुशीला को जिस प्रकार उन्होंने वर्णित किया है उसमें हमें जीवन की गति नहीं गतिशून्यता की चरमसीमा प्राप्त होती है। वह निर्जीव कठपुतली की तरह उपन्यासकार के संकेतों पर परिक्रमा करती हुई प्रतीत होती है तथा उस पर हमें यथार्थ की छवि नहीं परम्पराओं एवं रूढ़ियों का अभिशाप लगा हुआ प्रतीत होता है। इसमें हमें कहीं ना कहीं सामाजिक सद्भावना की छाया देखने को मिल ही जाती है।

" आज ही के दिन में आपकी दिनचर्या देखकर हम लोगों को निश्चय हो गया है कि आप परमेश्वर के भक्त हैं, पण्डित हैं और लोकाचार को भली भांति जानने वाले हैं। महाराज बल्लभ संप्रदाय के मंदिरों में, मंदिर के मुखिया भीतरियों को प्रसाद बेचते देखकर ही हमारा जी जलता था। भगवान का महा प्रसाद जैसा सुर दुर्लभ पदार्थ, जिसके मूल्य के आगे त्रिलोकी का राज्य भी तुच्छ है। वह दुकानें लगाकर बेचा जावे । बड़े अनर्थ की बात है किन्तु यहाँ आकर हम उसे भी गनीमत समझने लगे । यहाँ तो अवज्ञा की, अनाचार की हद हो गई।"१५

बालकृष्ण भट्ट जी इस युग के ऐसे रचनाकार हुए हैं जिसने सामाजिक विचारधारा के साथ अपनी रचनाओं में सामाजिक सद्भावना को समाहित किया है इनकी सुप्रसिद्ध रचना ' नूतन ब्रह्मचारी ' सामाजिक सद्भावना का सुप्रसिद्ध उदाहरण है । " विनायक एक ऐसा पात्र है जिसे भौतिक जीवन की विलासिता से कोई लालसा नहीं है। वह माता-पिता की आज्ञा का पालन करनेवाला, कर्मशील, उत्साही एवं सत्यनिष्ठ तथा सत्चरित्र बालक है। डाकू द्वारा कहा गया वाक्य विनायक के संपूर्ण चरित्र को स्पष्ट कर देता है। यथा- 'यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को क्षमा कर सकता है तो मैं तुमको दिल से क्षमा करता हूँ और ई.श्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि वह भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा करे।"१६

देवकीनंदन खत्री जी की रचनाओं का उद्देश्य मुख्य रूप से मनोरंजन प्रधान रहा है तथा इन्होंने अपनी रचनाओं में इस युग के पाठकों के लिए तिलिस्म और एय्यारी को जन सुलभ बनाने के लिए बहुत ही सफल प्रयास किया था एवम् इनके द्वारा रचित ' काजर की कोठरी ' सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने वाला एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में इन्होंने ज़मीनदार और वेश्या के जीवन पर दृष्टि केंद्रित करके समाज की गंभीर समस्याओं का वर्णन किया है और साथ ही साथ उसका समाधान भी अपनी क्षमता के अनुसार करते चले आए हैं। इन्होंने अपने इस उपन्यास के पात्रों को उच्च वर्ग से उठाया है तथा इन्होंने अपने उपन्यासों में राजकुमार एवं राजकुमारी को सच्चा और आदर्श प्रेमी दर्शाया है। इनके द्वारा रचित इस उपन्यास में कर्मफल से कोई भी पात्र अछूता नहीं रहता तथा यह उपन्यास बुरे कर्म का बुरा फल और अच्छे कर्म का अच्छा फल दिखाते हुए अपनी चरम सीमा तक पहुंचता है।

" राम सिंह और हरमन सिंह दोनों मित्र बड़े ही होशियार, बुद्धिमान, पंडित और वीर पुरुष थे और उन दोनों का स्वभाव भी ऐसा अच्छा था कि जो कोई एक दफे उनसे मिलता और बातें करता वही उनका प्रेमी हो जाता। इसके अतिरिक्त वे दोनों मित्र खूबसूरत भी थे और उनका सुडौल तथा कसरती बदन देखने योग्य था। "१७

किशोरी लाल गोस्वामी जी ने अपनी इस युग में सर्वाधिक मत्वपूर्ण एवम् सुप्रसिद्ध साहित्यकार की छवि बनाई हुई है। इन्होंने ६५ उपन्यासों की रचना की है तथा ये एक रूढ़िवादी सनातन धर्मी थे और इनके सभी उपन्यासों में सनातन धर्म की आदर्शवादी मान्यताएं पाठक को पढ़ने को मिलती है। इनके ' त्रिवेणी या सौभाग्य श्रेणी, तरुण तपस्विनी, पुनर्जन्म या सौतिया डाह, माधवी माधव व मदन मोहिनी, कुसुम कुमारी वा स्वर्गीय कुसुम, चपला व नव्य समाज, अंगूठी का नगीना तथा लीलावती आदि उपन्यासों में इन्होंने सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। इनके उपन्यासों में मध्य वर्गीय नारी के जीवन की समस्याओं का आंकलन पुरातन रूढ़िवादी विचारों के आधार पर किया गया है। इन्होंने पतिवृत संस्कारों की सीमाओं में अवरुद्ध नारी को आदर्श रूप प्रदान किया है तथा ये पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति एवं प्रगतिशील विचारों का विरोध करते चले आए हैं। इनके नारी पात्र परम्परागत संस्कारों में जकड़े हुए प्रतीत होते हैं परन्तु इनकी दृष्टि में ये आदर्श पात्र माने गए हैं।

" एक ने कहा - " अरे ! यह तो साक्षात वीरता के अवतार ही दिखाई पड़ते हैं। अहा ! इतने थोड़े उम्र में ऐसी वीरता कभी नहीं देखी थी हो ना हो इन्हीं महात्मा ने अनाथ बालिका के प्राण बचाए होंगे। "१८

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी ने मध्य वर्ग के विवाह तथा प्रेम की समस्याओं का चित्रण ' ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा ' अधखिला फूल ' में बड़ा ही मनोरम रूप प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपनी प्रथम रचना में अनमेल विवाह का दुष्परिणाम तथा दूसरे में धर्म की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए प्रसंगवश धार्मिक अंधविश्वासों के दुष्परिणामों को भी अपनी रचनाओं में दर्शाया है।

' ठेठ हिन्दी का ठाठ में ' देवनन्दन एवं देवबाला के बीच बाल सुलभ स्नेह को एक आकर्षक रूप प्रदान किया गया है किन्तु देवबाला का पिता उसका विवाह पापचारी रामनाथ से कर देता है। जो उसे छोड़ कर कलकत्ता में एक रखैल के साथ अपना जीवन व्यतीत करने लगता है। देवबाला एक स्थल पर कहती है कि - " पति नारी का देवता है वह कैसा ही क्यों ना हो पर तिरिया उसका बुरा नहीं चाह सकती।"^{१९}

यहाँ देवबाला पाठक को एक परंपरावादी आदर्श नारी प्रतीत होती है जिसमें हरिऔध जी ने पतिव्रत धर्म का आदर्श प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास देश की कुरीतियों, झूठे धार्मिक आडंबरों, थोथी पारंपरिक मान्यताओं पर करारा व्यंग्य करता हुआ दिखाई पड़ता है।

ब्रजनंदन सहाय जी ने ' सौंदर्य- उपासक', ' राधाकांत ' एवं ' अरण्य बाला ' सामाजिक एवं सांस्कृतिक सद्भावना परक साहित्यों को रचा है। इनके उपन्यास राधाकांत तथा अरण्यबाला दोनों रचनाओं में इन्होंने देश की आर्थिक विषमता का बहुत ही विस्तार से वर्णन किया है। इनके इन उपन्यासों के पात्र पाश्चात्य संस्कृति का समर्थन करते हुए नजर आते हैं अथवा नवीन शिक्षा और प्रगतिशील विचारों का समर्थन इस बात का द्योतक माना जाता है कि इस युग में मध्यवर्ग की चेतना जागरूक हो रही थी तथा सहाय जी ने अपनी रचनाओं में आर्थिक दुर्दशा, बेकारी, स्त्री शिक्षा तथा देश की राजनीति में उथल - पुथल जैसे प्रश्नों को अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है जो कि सामाजिक सद्भावना को संजोए हुए प्रतीत होते हैं।

" कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रही। फिर हरेंद्र ने पूछा, " कैसे दिन काटते हैं? क्या करता है? तेरा विवाह हुआ है या नहीं? इत्यादि इत्यादि" संक्षेप में अपनी कहानी उसे मैंने कह सुनाई। सुनकर वह संतुष्ट हुआ अथवा नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। किंतु यह अवश्य कहूँगा कि वह मेरी वर्तमान जीवनी वह ध्यान पूर्वक सुन रहा था।"^{२०}

मनन द्विवेदी ' जी द्वारा रचित रामलाल ' (सन् १९१७ ई.) एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन को दर्शाया गया है जिसमें ग्रामीण परिवेश की सद्भावना बहुत ही मार्मिक प्रस्तुत हुई है और इस रचना में कुछेक स्थलों पर नगरीय लोग भी प्रस्तुत किए गए हैं परन्तु उनके मुख्य पात्र और घटनाएँ गावों से ही संबंधित दर्शाई गई है। यह इस युग का सर्वप्रथम एक ऐसा उपन्यास माना जाता है। जिसमें ग्रामीण जीवन का इतना यथार्थवादी प्रस्तुतीकरण किया गया है कि इनके द्वारा रचित सुप्रसिद्ध रचना 'कल्याणी' सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण सामाजिक रचना मानी जाती है।

" वर्षा की साँझ में आकाश का अंधकार भी मानो और घना हो गया है। रंगहीन बादलों के निःशब्द दबाव के नीचे कलकत्ता शहर जैसे एक बहुत बड़े उदास कुत्ते की तरह पूँछ के नीचे मुँह छिपा कुंडली बाँधकर चुपचाप पड़ा हुआ है। पिछली साँझ से ही बूँदा-बाँदी होती रही है; इस वर्षा से खिड़की की धूल कीचड़ बन गई है, किंतु कीचड़ को धो डालने या बहा ले जाने लायक वर्षा नहीं हुई। आज तीसरे पहर चार बजे से बारिश बंद है, लेकिन घटा के आसार अच्छे नहीं हैं। वर्षा आने की आशंका से भरी हुई साँझ की उस बेला में जब मन न सूने कमरे में टिकता है, न बाहर राहत पाता है, एक तिमंजिले मकान की सीली हुई छत पर दो जने बेंत के मूढ़ों पर बैठे हैं। बचपन में ये दोनों बंधु इसी छत पर स्कूल से लौटकर दौड़-दौड़कर खेले हैं; परीक्षा से पहले दोनों चिल्ला-चिल्लाकर पाठ रटते हुए पागलों की तरह तेज़ी से चक्कर काटते हुए इसी छत पर घूमे हैं; गर्मियों में कॉलेज से लौटकर शाम को इसी छत पर भोजन करके तर्क-वितर्क करने में ऐसे खो गए कि रात के दो बज गए हैं, और सबेरे की धूप ने जब उनके चेहरे पर बरसकर उन्हें जगाया है तब चौंककर उन्होंने जाना है कि दोनों वहीं चटाई पर पड़े-पड़े ही सो गए थे। कॉलेज की परीक्षाएँ जब और बाकी न रही, तब इसी छत पर हर महीने एक बार 'हिंदू हितैषी सभा' का अधिवेशन होता रहा है, इन दोनों बंधुओं में एक उसका सभापति है, और दूसरा उसका सेक्रेटरी। सभापति का नाम गौरमोहन। जान-पहचान के लोग उसे गोरा कहकर बुलाते हैं। वह मानो बेतहाशा बढ़ता हुआ आस-पास के लोगों से ऊपर उठ गया है। उसके कॉलेज के पंडितजी उसे रजत-गिरि कहकर पुकारते थे। उसकी देह का रंग बहुत ही उग्र रूप से चिट्ठा था, उसे स्निग्ध करने वाली तनिक-सी मात्र भी उसमें नहीं थी। करीब छह फुट लंबा डील, चौड़ी काठी, मानो बाघ के पंजे की तरह, गले का स्वर ऐसा भारी और गंभीर कि एकाएक सुनने पर लोग चौंककर पूछ बैठते हैं, यह क्या है? उसके चेहरे की गठन भी अनावश्यक रूप से बड़ी और अतिरिक्त कठोर है; गाल और ठोड़ी का उभार मानो दुर्ग-द्वार की दृढ़ अर्गला की भाँति, आँखों के ऊपर भौंहें जैसे हैं ही नहीं और वहाँ से माथा कानों की ओर फैलता चला गया है। ओठ पतले और दबे हुए; उनके ऊपर नाक मानो खाँडे की तरह उठी हुई है। आँखें छोटी किंतु तीक्ष्ण, उनकी दृष्टि मानो तीर की धार की तरह दूर अदृश्य में अपना लक्ष्य ताक रही हो, किंतु क्षण-भर में ही लौटकर पास की चीज पर भी बिजली की तेज़ी से चोट कर सकती हो। देखने पर गौरमोहन को सुंदर नहीं कहा जा सकता, किंतु उसे देखे बिना रहा भी नहीं जा सकता-लोगों के बीच होने पर दृष्टि बरबस उसकी ओर खिंच जाती है।"^{२९}

इस प्रकार इस युग के सामाजिक उपन्यासों में श्री उमराव सिंह जी द्वारा रचित ' आदर्श बहू ', ' भाई बहिन ', 'प्रेमलता' तथा श्री गया प्रसाद जी द्वारा लिखित 'दुनिया', मनोहर लाल कृत 'क्रांति मला', देवकी नंदन सिंह जी का ' कौशल किशोर ', श्री गौरीदत्त जी का ' गिरिजा ', श्री गंगा प्रसाद गुप्त जी का ' लक्ष्मी देवी ', श्री देवराज कृत ' दुनिया अर्थात् संसार की कुछ बातें' आदि अनेक उपन्यास एवं उपन्यासकारों को सामाजिक सदभावना में परिगणित किया जा सकता है जो कि इस युग के बहुत ही प्रचलित रचना एवं रचनाकार हैं।

२:- प्रेमचंद युगीन कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना :- प्रेमचंद युगीन कथा साहित्य में कई लेखक हुए जिन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक सद्भावना को महत्व देकर अपनी रचनाओं में उसका समावेश किया। इस युग का गद्य के विकास में अत्यंत ही विशेष महत्त्व है। इस युग के पण्डित रामचंद्र शुक्ल (१८८४-१९४१)जी ने निबंध, हिन्दी साहित्य के इतिहास और समालोचना के क्षेत्र में बहुत ही गंभीर लेखन प्रस्तुत किया तथा इन्होंने साहित्य समीक्षा से संबंधित निबंधों की भी रचना बहुत ही वैचारिक ढंग से की है। इनके निबंधों में भाव और विचार अर्थात् बुद्धि और हृदय दोनों का समन्वय पाया गया है। आज भी इनका हिन्दी साहित्य का इतिहास अपनी सार्थकता को सफल बनाए हुए है एवं जायसी, तुलसीदास और सूरदास पर लिखी गई इनकी समालोचनाओं ने भावी आलोचकों का अपनी क्षमता के अनुसार मार्गदर्शन किया है और इस काल के अन्य कई सुप्रसिद्ध निबंधकारों में जैनेन्द्र कुमार जैन, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी तथा जयशंकर प्रसाद आदि उल्लेखनीय हैं जिन्होंने सामाजिक सद्भावना को अपनी रचनाओं में स्थान देकर इस युग की रचनाओं को सामाजिक सद्भावपूर्ण रूप से बहुत ही सफलतापूर्वक रचा है।

कथा-साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद जी ने तो अपनी रचनाओं के द्वारा जैसे क्रांति ही कर डाली इनके इस युग में प्रवेश लेते ही कथा-साहित्य केवल मनोरंजन, कौतूहल और नीति का विषय ही नहीं रहा बल्कि सीधे सामाजिक सद्भावना लिए हुए जीवन की समस्याओं से जाकर जुड़ गया। इन्होंने ' रंगभूमि', ' सेवासदन ', ' निर्मला ' गबन ' एवं गोदान आदि सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण उपन्यासों को रचा तथा इनकी तीन सौ से अधिक कहानियाँ ' मानसरोवर ' के आठ भागों में तथा ' गुप्त धन ' के दो भागों में वर्णित है, इनकी कहानियां ' पूस की रात ', ' कफन ', ' शतरंज के खिलाड़ी ', ' पंच परमेश्वर', ' नमक का दारोगा ' तथा 'ईदगाह' आदि बहुत ही लोकप्रिय तथा पाठकों के मन को लुभाने वाली सिद्ध हुई हैं। जिनमें सामाजिक सद्भावना का प्रस्तुतीकरण बहुत ही मार्मिक रूप से नज़र आता है।

" खैरखाही रुपए के लालच से नहीं है। अपने मालिक की आँख बचाकर एक कौड़ी लेना भी हराम समझता हूँ। खैरखाही इसलिए करता हूँ कि उनका नमक खाता हूँ।"^{२२}

आलोच्य काल के अन्य कथाकारों में विशम्भर शर्मा उग्र, उपेंद्रनाथ अशक, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा आदि के नाम बहुत ही सुप्रसिद्ध हैं। नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद जी का बहुत ही विशेष स्थान माना गया है इनके 'चन्द्रगुप्त', ' स्कंदगुप्त ', ' ध्रुवस्वामिनी ' जैसे ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास और कल्पना तथा भारतीय और पाश्चात्य नाट्य पद्यतियों का समावेश हुआ है इनके अलावा लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र माथुर आदि इस काल के सुप्रसिद्ध नाटककार माने गए हैं जिन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक सद्भावना को अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार स्थान दिया।

“हिन्दुओं में पारस्परिक तनिक भी सहानुभूति नहीं। मैं जल उठा। मनुष्य, मनुष्य के दुःख - सुख से सौदा करने लगता है और उसका मापदंड बन जाता है रुपया। आप देखते नहीं कि हिन्दू की छोटी-सी गृहस्थी में कूड़ा करकट तक जुटा रखने की चाल है, और उन पर प्राण से बढ़ कर मोह। दस-पाँच गहने, दो-चार बर्तन, उनको बीसों बार बन्धक करना और घर में कलह करना, यही हिन्दू घरों में आये दिन के दृश्य हैं। जीवन का कैसे कोई लक्ष्य नहीं! पद दलित रहते-रहते उनकी सामूहिक चेतना जैसे नष्ट हो गयी है।”^{२३}

प्रेमचंद पूर्ववर्ती उपन्यासों की उपर्युक्त चर्चा के पश्चात् प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासकारों के लेखे - जोखे के बिना प्रेमचंद युग तक के समग्र उपन्यासों की व्यवस्थित रूपरेखा का अनुमान लगाना मुश्किल है। इसीलिए इन सभी को दृष्टि में रखकर संक्षेप में प्रेमचंद एवं उनके समकालीन उपन्यासकारों की चर्चा करना बहुत ही आवश्यक है। इस युग में भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग में अंधविश्वास और अशिक्षा का वर्चस्व था एवं स्त्रियों का समाज में स्वतंत्र अस्तित्व ना होकर पुरुषों पर निर्भर था इस परिस्थिति को प्रेमचंद तथा समकालीन उपन्यासकारों ने समाज के इस विगलित रूप को अपनी कृतियों में चित्रित करने का एक सफल प्रयत्न किया है। इस युग की औपन्यासिक चेतना, रोमांस, तिलिस्म आदि के दायरे से निकलकर नई सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम ढूंढ़ रही थी।

प्रेमचंद जी अपने आरंभिक रचना काल में गांधीवाद से बहुत ज्यादा प्रभावित थे इसी कारण उनके अधिकांश पात्र आदर्शवादी नीति के फलस्वरूप अंत तक आते-आते पवित्र और परिवर्तित जीवन व्यतीत करने लगते हैं। इनका उद्देश्य था कि सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ परिस्थितियों तथा संस्कारों से ग्रस्त प्राणियों की सच्चाई का उद्घाटन किया जाए ।

प्रेमचंद जी का युग सन् १९१८ ई. से सन् १९३६ ई. तक का माना गया है। इस युग में सामंती समाज महाजनी समाज से टकरा रहा था तथा किसानों का ज़मींदारों से, मिल मालिकों का मजदूरों से, अभिजात्य वर्ग का निम्न वर्ग से संघर्ष होना शुरू हो गया था। इस काल के दौरान छुआछूत की समस्या से सारा हिन्दू समाज ग्रसित था तथा मध्य वर्ग उच्च वर्ग के स्तर पर पहुंचने के लिए प्रयत्न कर रहा था। गांधी युग के कारण इस युग की हड़तालें प्रायः शांतिपूर्ण एवम् अहिंसात्मक ही रहती थीं। इस युग में मध्यम वर्गीय जीवन विलासिता का लगातार शिकार हो रहा था तथा संगठन के आभाव के कारण लगातार कुंठाएँ बढ़ती जा रही थीं।

प्रेमचंद जी ने अपनी कृतियों में प्रायः समाज की लगभग सम्पूर्ण समस्याओं को अपनी रचनात्मक दृष्टि द्वारा यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करने का भरसक प्रयत्न किया है। इनकी 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प' आदि रचनाओं में धार्मिक सद्भावना की बात किसी ना किसी रूप में प्रस्तुत होती हुई नज़र आती है। जिसकी पुष्टि 'रंगभूमि' की ये पंक्तियाँ पूर्ण करती हुई परिलक्षित होती हैं - "फिटन में सामने की गद्दी पर मि. जॉन सेवक और उनकी पत्नी मिसेज जॉन सेवक बैठी हुई थीं। दूसरी गद्दी पर उनका जवान लड़का प्रभु सेवक और छोटी बहन सोफ़िया सेवक थी। जॉन सेवक दुहरे बदन के गोरे-चिट्टे आदमी थे। बुढ़ापे में भी चेहरा लाल था। सिर और दाढ़ी के बाल खिचड़ी हो गए थे। पहनावा ऍंगरेजी था, जो उन पर खूब खिलता था। मुख आकृति से गरूर और आत्मविश्वास झलकता था। मिसेज सेवक को काल-गति ने अधिक सताया था। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और उससे हृदय की संकीर्णता टपकती थी, जिसे सुनहरी ऐनक भी न छिपा सकती थी। प्रभु सेवक की भैंसें भीग रही थीं, छरहरा डील, इकहरा बदन, निस्तेज मुख, आँखों पर ऐनक, चेहरे पर गम्भीरता और विचार का गाढ़ा रंग नजर आता था। आँखों से करुणा की ज्योति-सी निकली पड़ती थी। वह प्रकृति-सौंदर्य का आनंद उठाता हुआ जान पड़ता था। मिस सोफ़िया बड़ी-बड़ी रसीली आँखोंवाली लज्जाशील युवती थी। देह अति कोमल, मानो पंचभूतों की जगह पुष्पों से उसकी सृष्टि हुई हो। रूप अति सौम्य, मानो लज्जा और विनय मूर्तिमान हो गए हों। सिर से पाँव तक चेतना ही चेतना थी, जड़ का कहीं आभास तक न था।"^{२४}

सामाजिक सद्भावना का आदर्श रूप 'गोदान' में गोबर तथा उसके मुसलमान दोस्तों के बीच स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है एवं नारी की समस्याओं के चित्रण के अन्तर्गत कुछ ऐसे उपन्यासों जैसे-- भगवती प्रसाद वाजपायी का ' ' त्यागमयी ', गोविंद वल्लभ पंत का ' मदारी ', उषादेवी मिश्रा का 'वचन का मोल' में युगीन नारी के आदर्शोन्मुखी सद्भाव का एक सफल चित्र प्रस्तुत किया गया है।

आलोच्य युग में विधवा की समस्या तथा उनके दोषों के निराकरण में भी इस युग के उपन्यासकार बहुत ही क्रियाशील रहे हैं तथा विधवा समस्या पर प्रमुख रूप से आधारित उपन्यासों में तेजरानी दीक्षित का ' हृदय का कांटा ', चंद्रशेखर शास्त्री का ' विधवा के पुत्र ', चतुरसेन शास्त्री का ' अमर अभिलाषा ' तथा ' आत्मदाह ', गंगा प्रसाद श्रीवास्तव का ' गंगा जमुनी ' आदि उपन्यास अपने आपमें सामाजिक सद्भावना को इतने मनोरम रूप से प्रस्तुत करते हैं कि पाठक इनमें रमता चला जाता है।

" आलोच्य उपन्यास में कुरीतियों का प्रदर्शन भली-भांति किया गया है और यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि गृहस्थ जीवन की अनेक अशुभ घटनाओं का कारण सामाजिक कुरीतियाँ हैं।"^{२५}

प्रेम की दिशा में भी युगीन उपन्यासकारों ने सामाजिक सद्भावना के साथ साथ स्वच्छंद प्रेम का भी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इनमें जाति, धर्म, प्रदेश आदि की सीमाओं को तोड़कर उन्मुक्त सद्भाव की चर्चा प्रस्तुत की गई है। इस युग में नारियों में विद्रोह का स्वर मुखर होता हुआ प्रतीत होता है। इस युग के मध्यमवर्गीय जीवन में आदर्श की भावना गुपचुप तरीके से समाहित रह सकती थी परन्तु सामाजिक तथा आर्थिक दबाव के कारण नारी विद्रोह का स्वर बहुधा मुखर रूप प्राप्त नहीं कर पाता था। जिसका इस युग के रचनाकार सम्पूर्ण रूप से अपनी रचनाओं में वर्णन नहीं कर पाते थे।

'गोदान' में होरी की बेटी बूढ़े से ब्याह दिए जाने पर भी वह उसे पूर्ण रूप से स्वीकार करके अपने जीवन में संतोष का अनुभव करती है। पर उन्मुक्त प्रेम की जो धारा 'रंगभूमि' तथा 'कर्मभूमि' आदि से प्रारम्भ हुई वृंदावन लाल वर्मा के 'गढ़ कुंडार' से होती हुई, जैनेन्द्र के सुनीता तक हम देख सकते हैं। यहाँ पर पुरुष का आकर्षण और पति का प्रेम परस्पर विरोधी प्रस्तुत नहीं होते यहाँ तक की नारी के निर्वस्त्र होने में भी उपन्यासकारों को कामुक्ता नजर नहीं आती।

"होरी की छाती गज-भर की हो गई। अस्सी रुपए में गाय महँगी न थी। ऐसा अच्छा डील-डौल, दोनों जून में छः-सात सेर दूध, सीधी ऐसी कि बच्चा भी दुह ले। इसका तो एक-एक बाछा सौ-सौ का होगा। द्वार पर बँधेगी तो द्वार की सोभा बढ़ जायगी। उसे अभी कोई चार सौ रुपए देने थे; लेकिन उधार को वह एक तरह से मुफ्त समझता था। कहीं भोला की सगाई ठीक हो गई, तो साल-दो साल तो वह बोलेगा भी नहीं। सगाई न भी हुई, तो होरी का क्या बिगड़ता है! यही तो होगा, भोला बार-बार तगादा करने आएगा, बिगड़ेगा, गालियाँ देगा; लेकिन होरी को इसकी ज्यादा शर्म न थी। इस व्यवहार का वह आदी था। कृषक के जीवन का तो यह प्रसाद है। भोला के साथ वह छल कर रहा था और यह व्यापार उसकी मर्यादा के अनुकूल न था। अब भी लेन-देन में उसके लिए लिखा-पढ़ी होने और न होने में कोई अंतर न था। सूखे-बूड़े की विपदाएँ उसके मन को भीरु बनाए रहती थीं। ईश्वर का रुद्र रूप सदैव उसके सामने रहता था; पर यह छल उसकी नीति में छल न था। यह केवल स्वार्थ-सिद्धि थी और यह कोई बुरी बात न थी। इस तरह का छल तो वह दिन-रात करता रहता था। घर में दो-चार रुपए पड़े रहने पर भी महाजन के सामने कसमें खा जाता था कि एक पाई भी नहीं है। सन् को कुछ गीला कर देना और रूई में कुछ बिनौले भर देना उसकी नीति में जायज था और यहाँ तो केवल स्वार्थ न था, थोड़ा-सा मनोरंजन भी था। बुद्धों का बुढ़भस हास्यास्पद वस्तु है और ऐसे बुद्धों से अगर कुछ ऐंठ भी लिया जाय, तो कोई दोष-पाप नहीं।"^{२६}

सामाजिक सद्भाव को उपन्यासों में स्थान देने के लिए उपन्यासों के मार्ग में वृंदावन लाल वर्मा जी का उद्देश्य भी 'क्या है' के स्थान पर 'क्या होना चाहिए' पर इनकी सम्पूर्ण दृष्टि केंद्रित रही है। इनके उपन्यासों को एक सूत्र में पिरोने वाला एक मात्र साधन सहानुभूतिमय पुरुषार्थ है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों की रचना मनोविज्ञान की शास्त्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं की बल्कि मानव अनुभूतियों का कुशलता से चित्रण करने के लिए किया है। इनके ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में ' गढ़कुन्डार ', ' लगन ', ' संगम ' कुंडलीचक्र ', ' प्रेम की भेंट ', ' प्रत्यागत ', विराटा की पद्मिनी ', 'माधव जी सिंधिया' आदि इनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। जिनमें इन्होंने सामाजिक सद्भावना का समावेश किया है। जिसकी पुष्टि इनके 'गढ़ कुंडार' उपन्यास की इन पंक्तियों से की जा सकती है:-

" मंगलदास के कारण बांदा जिले में खिलाफत-आंदोलन को खासा जोर मिला, और वह स्कूल छोड़ने के बाद अंत में खिलाफत - कमेटी के संयुक्त मंत्री भी हो गया। यह बात टीकाराम को एक दिन भजन - पूजन की समाप्ति पर मालूम हो गई। लड़के की कीर्ति से बाप का पुलकित हो जाना स्वाभाविक है, परंतु मंगल दास की यह कीर्ति सुनकर टीकाराम को ना -मालूम क्यों कुछ संकोच- सा मालूम हुआ।"^{२७}

-: प्रेमचंद युग की कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक सद्भावना :-

साहित्यों के आधार पर सामाजिक सद्भावना को वर्णन करने के पश्चात् इस युग की कथाओं में भी कथाकारों ने सामाजिक सद्भाव का भरपूर प्रयोग किया था। इस युग के कई कहानीकार ऐसे हुए हैं जिनकीउनकी रचनाएं आज के परिवेश में सामाजिक परिस्थितियों के आईने के रूप में उभर कर हमारे सामने प्रतीत होती हैं।

इस युग में कुछ समय के पश्चात् प्रेमचंद हिन्दी कहानियों के जगत में संपूर्ण रूप से छा गए। इन्होंने लगभग २०० कहानियों की रचना की जिनमें इन्होंने मानव चरित्र का सूक्ष्मता से वर्णन किया है। उनमें से इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं-- 'आत्माराम'(१९२०), 'बूढ़ी काकी'(१९२१), 'हार की जीत'(१९२२), 'परीक्षा'(१९२३), 'शतरंज के खिलाड़ी'(१९२५), 'पूस की रात'(१९३०), 'ईदगाह'(१९३३), 'बड़े भाई साहब'(१९३४), 'कफन'(१९३६) जो अपने आपमें सामाजिक सद्भावना को संजोए हुए हैं।

'कफन' कहानी की कुछ पंक्तियों द्वारा सामाजिक सद्भावना की पुष्टि की जा सकती है :- " जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी, और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचार-शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था। हाँ, उसमें यह शक्ति न थी, कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मण्डली के और लोग गाँव के सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव उँगली उठाता था। फिर भी उसे यह तसकीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम-से-कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती, और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फायदा तो नहीं उठाते! दोनों आलू निकाल-निकालकर जलते-जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र न था कि ठण्डा हो जाने दें। कई बार दोनों की जबानें जल गयीं। छिल जाने पर आलू का बाहरी हिस्सा जबान, हलक और तालू को

जला देता था और उस अंगारे को मुँह में रखने से ज्यादा खैरियत इसी में थी कि वह अन्दर पहुँच जाए। वहाँ उसे ठण्डा करने के लिए काफी सामान थे। इसलिए दोनों जल्द-जल्द निगल जाते। हालाँकि इस कोशिश में उनकी आँखों से आँसू निकल आते।"^{२८}

उल्लिखित कहानियों में इन्होंने समाज के हर एक पहलू को उभारने का तथा पाठकों के समक्ष सामाजिक सद्भावना की लहर को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिसमें सामाजिक सद्भावना का भरपूर समावेश पाठक को प्राप्त होता है।

प्रेमचंद जी की कहानियों में सामाजिक सद्भावना सुस्पष्ट प्रतीत होती है। इनके द्वारा इनकी रचनाओं में गाँव का जीवन मुखरित रूप लेकर पाठकों के सामने प्रस्तुत हुआ है। इनकी कुछ कहानियाँ सत्याग्रह आंदोलन, विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के वातावरण को आधार बना कर रची गई हैं। इनकी कहानियों में यथार्थ और आदर्श का अद्भुत संयोग देखने को मिलता है तथा भाषा की सहायता और बोलचाल के मुहावरों के कारण इनकी कहानियाँ विशेष लोकप्रियता प्राप्त किए हुए हैं।

इसी काल में विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक जी की कहानियाँ भी सामाजिक सद्भावना को लिए हुए प्रकाश में आईं। 'गल्पमंदिर', 'चित्रशाला', 'कल्लोल' आदि संग्रहों में इनकी दो सौ से अधिक कहानियाँ समाहित हैं। जिनमें बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा आदि सामाजिक समस्याओं का चित्रण प्रतीत होता है तथा इनकी अधिकतम रचनाएं भी सामाजिक सद्भावना को अपने आप में संजोए हुए हैं। इनके कथानक जो हैं वो अपने आप में शहरी जीवन पर आधारित माने गए हैं तथा कौशिक जी की 'ताई' और 'पगली' कहानियाँ हिन्दी जगत में विशेष रूप में प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए हैं। इनकी कहानियों में भी सामाजिक सद्भावना की एक अमिट छाप पाठकों को दिखाई देती है। जिसकी पुष्टि इनकी कहानी 'ताई' की इन पंक्तियों से होती है :-

"रामेश्वरी कुछ उत्तेजित हो कर बोली-- "बातें बनाना बहुत आसान है। तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो, पर मुझे यह बातें अच्छी नहीं लगतीं। हमारे भाग ही फूटे हैं, नहीं तो यह दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारा चलन तो दुनिया से निराला है। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो।" "२९

अज्ञेय जी के कहानियों के पात्र ऐतिहासिक रूप से बहुमुखी माने गए हैं, जो सामाजिक विषमताओं से जूझने के लिए इनकी रचनाओं में हमेशा तत्पर रहते हैं। इनका प्रथम कहानी - संग्रह 'त्रिपथगा' (१९२१) माना गया है। इनमें आधुनिक विश्व में होने वाले युद्ध के कारणों की एक विस्तृत खोज की गई है। इनकी 'कड़ियाँ', 'रेल की सीटी', 'हरसिंगार' आदि कहानियों में आधुनिक शासक प्रणाली व परम्परागत मानव मूल्यों का विरोध किया गया है एवम् सामाजिक सद्भाव को इन्होंने इन रचनाओं में अधिक महत्त्व दिया है जिनकी कहानी 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' की पुष्टिगत पंक्तियाँ इस प्रकार हैं: --

" धीरे-धीरे एक तन्द्रा छा गयी स्टेशन पर। अमिना, जमीला और सकीना चुपचाप बैठी हुई अपनी-अपनी बातें सोच रही थीं। उनमें एक बुनियादी समानता भी थी और सतह पर गहरे और हल्के रंगों की अलग-थलक छटा भी... तीनों के स्वामी बाहर थे - दो के फ़ौज में थे और वहीं फ्रंटियर में नौकरी पर थे - उन्होंने कुछ समय बाद आकर पत्नियों को लिवा ले जाने की बात लिखी थी; सकीना का पति कराची के बन्दरगाह में काम करता था और पत्र वैसे ही कम लिखता था, फिर इधर की गड़बड़ी में तो लिखता भी तो मिलने का क्या भरोसा! सकीना कुछ दिन के लिए मायके आयी थी सो उसे इतनी देर हो गयी थी, उसकी लड़की कराची में ननद के पास ही थी। अमिना के दो बच्चे होकर मर गये थे; जमीला का खाविन्द शादी के बार ही विदेशों में पलटन के साथ-साथ घूम रहा था और उसे घर पर आये ही चार बरस हो गये थे। अब... तीनों के जीवन उनके पतियों पर केन्द्रित थे, सन्तान पर नहीं, और इस गड़बड़ के जमाने में तो और भी अधिक... न जाने कब क्या हो - और अभी तो उन्हें दुनिया देखनी बाक़ी ही है, अभी उन्होंने देखा ही क्या है? सरदारपुरे में देखने को है भी क्या-यहाँ की खूबी यही थी कि हमेशा अमन रहता और चैन से कट जाती थी, सौ अब वह भी नहीं, न जाने कब क्या हो... अब तो खुदा यहाँ से सही-सलामत निकाल ले सही..."^{३०}

इस युग के अन्य कई लेखक हैं जिन्होंने सामाजिक सद्भावना के लिए कथाओं की रचना की जिनमें से कुछ प्रसिद्ध कहानीकार हैं-- राधिका रमण प्रसाद सिंह जी की कानों का कंगन ' , ' गांधी की टोपी ' आदि प्रसिद्ध कहानियाँ हैं जो समाज सुधार की दृष्टि से इन्होंने रची थी एवं सामाजिक सद्भाव को इन रचनाओं में समाहित किया था तथा इनके साथ भगवती प्रसाद वाजपेयी जी ने भी सामाजिक सद्भावना को महत्व देते हुए ' मधुपर्क ' , ' दीपमालिका ' तथा ' मिठाई. वाला ' आदि रचनाओं की रचना की। मुरलीवाला हर्ष-गद्गद हो उठा बोला - "देंगे भैया! लेकिन जरा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएंगे. बेचने तो आए ही हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन.... हां, बाबूजी, क्या पूछा था आपने कितने में दीं!... दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से है, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूंगा."^{३१} ये पंक्तियाँ अपने मे सामाजिक सद्भावना को संजोए हुए हैं।

आलोच्य युग में महिला लेखिकाओं ने भी समाज को अपना भरपूर योगदान दिया तथा रचनाएं भी की जिनमें से सुभद्रा कुमारी चौहान जी की कहानियाँ ' बिखरे मोती ' तथा ' उन्मादिनी ' आदि कहानी- संग्रहों में संग्रहीत हैं। इनकी समजिक सद्भाव से परिपूर्ण कहानी ' पापी पेट ' की रचना इसी युग में की गई थी एवं इनके साथ - साथ शिवरानी देवी ने भी कई सामाजिक सद्भाव की कहानियाँ लिखी और इनके द्वारा रची हुई कहानियाँ कौमुदी में छपी तथा उषादेवी मिश्रा जी की सामाजिक कहानियाँ ' पिऊ कहाँ ' , ' गोधूलि, ' देवदासी ' आदि भावुकता पूर्ण कहानियाँ भी इसी काल में प्रकाशित हुई । सुभद्रा कुमारी चौहान जी के कहानी संग्रह बिखरे मोती की एक कहानी मंझली रानी की ये पंक्तियाँ सामाजिक सद्भावना को व्याख्यायित करती हैं।

" पिताजी मेरी किस्मत की सराहना करके कहते मेरी तारा तो रानी बनेगी। रानी बनने की खुशी में मैं फूली - फूली फिरती थी। भाइयों का विरोध करना मुझे अच्छा नहीं लगता किंतु मैं उनके सामने कुछ कह नहीं सकती थी। खैर भाइयों के विरोध करने पर भी मेरा विवाह मझले राजा मनमोहन के साथ ही गया। "३३

३:- प्रेमचंदोत्तर युगीन कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भावना :- प्रेमचंद पूर्व तथा प्रेमचंद युग के पश्चात् प्रेमचंदोत्तर युग की रचनाओं में भी सामाजिक सद्भावना का वर्णन बहुतायत में हमें देखने को मिल जाता है। जिस प्रकार प्रेमचंद जी का कथा- साहित्य में आविर्भाव तिलिस्मी, ऐयारी, जासूसी तथा घटना प्रधान उपन्यासों की मनोरंजन प्रधान धारा में एक नवीन मोड़ प्रदान करने वाला था तथा युगीन सामाजिक चेतना को आत्मसात कर नई दिशा देने वाला था। उसी प्रकार उनके निधन के तदोपरांत औपन्यासिक धारा के विकास की दृष्टि से इनके बाद का युग एक नए युग का सूचक रहा है, जिसे हम प्रेमचंदोत्तर युग की संज्ञा देते हुए आ रहे हैं।

गद्य के विकास की दृष्टि से प्रेमचंदोत्तर युग प्रौढ़ तथा विकसित अवसर माना गया है तथा इस युग में न केवल उपन्यास अपितु गद्य की अनेक धाराएं भी विकसित होती हुई प्रतीत होती हैं। इस युग की तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएं हमें देखने को मिल जाती हैं जिनके द्वारा उपन्यास की धारा केवल प्रभावित ही नहीं रही अपितु उसमें कई प्रकार के परिवर्तन भी आए हैं। इस युग की पहली घटना तो बहुत ही भयावह घटना थी क्योंकि इस दौरान द्वितीय महायुद्ध पूरे विश्व में चल रहा था तथा इस युग की दूसरी घटना यह थी कि इस युग में हमारा भारत देश आजादी प्राप्त कर चुका था और इस युग की तीसरी अथवा अंतिम घटना यह थी कि इसी दौरान महात्मा गांधी जी हत्या की गई थी।

सन् १९३९ ई. के विश्वयुद्ध ने सारे विश्व के मानस को पूर्ण रूप से हिला दिया था तथा भारतीय राजनीति ने भी इस दुखद युद्ध काल में नई दिशा ली थी और महात्मा गांधी के नेतृत्व के द्वारा चलने वाला भारत देश स्वतन्त्रता संग्राम ' भारत छोड़ो ' आंदोलन के रूप में सामने आ गया था तथा गांधी जी के नेतृत्व द्वारा चलाया गया ये आंदोलन अहिंसा की जगह हिंसात्मक रूप धारण कर चुका था और सन् १९४५ ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के साथ ही साथ कांग्रेस के सभी नेताओं को बंधनों से मुक्त कर दिया गया। इसी दौरान इंग्लैंड में लेबर पार्टी ने सत्ता संभाली तथा भारत में अंतिम वायसराय के रूप में लार्ड माउंटबेटन की नियुक्ति की गई तथा उसके साथ साथ देश को आजादी दिलाने की दिशा में सफल प्रयास होने लगे जिसके परिणाम स्वरूप सन् १९४६ ई. में ' जवाहरलाल नेहरू ' भारत देश के अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त हुए तथा इसी बीच मुस्लिम लीग के षड्यंत्रों के परिणाम स्वरूप देश में भीषण साम्प्रदायिक (हिन्दू-मुस्लिम) दंगे होने आरंभ हुए तथा कांग्रेसी नेताओं का अखण्ड और धर्मनिरपेक्ष एक स्वतंत्र भारत का स्वप्न छिन्न-भिन्न हो गया।

महात्मा गांधी के विचारों के विपरीत भारत देश दो भागों में बंट गया एक परतंत्र राष्ट्र दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजित हो गया तथा इसी प्रक्रिया में हिंसा का ऐसा भयानक तांडव हुआ जिसमें केवल लाखों लोगों की जानें ही नहीं गई अपितु उनसे भी कहीं अधिक लोग बेघर और अनाथ हो गए। इस दुर्दशा के पश्चात् १५ अगस्त १९४७ ई. को भारत देश स्वतंत्र तो हुआ परन्तु देश में व्याप्त हिंसा की लहर फिर भी शांत नहीं हुई निरंतर देश में सांप्रदायिक दंगे दिन प्रतिदिन होते रहे।

३० जनवरी सन् १९४७ ई. को नाथूराम विनायक गोडसे के द्वारा कुछ आंतरिक द्वेषों के होने के कारण महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। इस निर्मम प्रहार से भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व विगलित हो उठा था तथा हिन्दी उपन्यासों का रचनाकार भी सन् १९३९ ई. से सन् १९४८ ई. तक निरंतर आहत होता चला गया और गांधीवादी युग के आदर्शवाद से केवल उनका विश्वास ही अपने स्थान से नहीं डिगा अपितु भीषण नरसंहार, विस्थापित लोगों की समस्या, बढ़ती हुई आर्थिक विषमता, पारिवारिक जीवन का बिखराव, निरंतर बदलते हुए सामाजिक एवं वैयक्तिक मूल्यों की भीषण विडम्बना ने

उपन्यासकार के मानसिक स्तर को इतना आहत और आक्रांत कर दिया कि उसे अपनी स्थिति से घुटन और ऊब सी होने लगी और उन्हीं परिस्थितियों को वह अपनी रचनाओं में समाहित करता चला गया।

प्रेमचंदोत्तर युगीन कथा-साहित्य में उपर्युक्त सारी विषमताओं का कथाकारों ने अपनी आलौकिक रचनाओं में बहुत ही हृदय विदारक चित्रण प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया है तथा सामाजिक सद्भाव को लेकर सामाजिक समस्याओं के अत्यधिक दबाव के बीच वैज्ञानिक उपन्यासों की जो धारा प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासों के पूर्वार्द्ध में प्रवाहित हुई है ये भावना इस युग के साहित्यों में साफ परिलक्षित एवम् बलवती होती हुई प्रतीत होती है। यह भावना स्वतंत्रोत्तर साहित्यों की अपेक्षाकृत इस युग में थोड़ी धीमी पड़ गई थी और पुनः इस युग के उपन्यासकार सामाजिक समस्याओं का अपनी रचनाओं में चित्रण करने की ओर उन्मुख हो गए थे।

कालक्रम की दृष्टि के आधार पर प्रेमचंदोत्तर उपन्यास को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:- प्रथम:- प्रेमचंद जी के निधन से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक का युग तथा दूसरा:- स्वतंत्रोत्तर युग। परन्तु जैसा की हम पहले ही संकेत कर चुके हैं की इस युग के अधिकांश साहित्यकार दोनों ही युगों में अपनी रचनाएं निरंतर प्रस्तुत करते रहें हैं अतः विभाजन की दृष्टि से इस युग के उपन्यास - साहित्य को समग्र रूप से प्रस्तुत करने का निरंतर प्रयत्न किया गया है जिनका प्रवृत्ति की दृष्टि से अवलोकन अपनी क्षमता के अनुसार किया जा सके। इस प्रकार प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यास साहित्य को हम सरलता से मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, आंचलिक एवं सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण मान सकते हैं।

-: प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यासों में प्रस्तुत सामाजिक सद्भावना:-

इस युग के सामाजिक सद्भाव लिए हुए उपन्यास अर्थात् सामाजिक चेतना को आत्मसात् कर सकने वाले उपन्यासों को हम सामाजिक उपन्यास के अन्तर्गत परिगणित मानते आए हैं। प्रेमचंद जैसे परवर्ती कथाकारों ने अपने समय के बदलते हुए सामाजिक परिवेश को अपनी रचनाओं में वर्णित किया है तथा स्वतन्त्रता से पूर्व इस धारा के कथाकारों ने ग्रामीण जीवन से ज़मींदारों, किसानों, महाजनों, जातिगत मिथ्याभिमान, नारी मुक्ति का संघर्ष, विधवा की समस्या, वेश्या की समस्या आदि के जो चित्र अपनी रचनाओं में खींचे थे इन सबको इस युग के लेखकों ने बहुत ही व्यापक रूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया है।

आलोच्य युग के सामाजिक उपन्यासकारों को दो धाराओं में हम स्पष्ट रूप से देखते हैं पहली सामाजिक धारा और दूसरी समाजवादी धारा। इस धारा के प्रमुख उपन्यासकारों में भगवतीचरण वर्मा, ' यशपाल ', ' उपेंद्रनाथ अशक ', ' अमृतलाल नागर ', ' राहुल सांकृत्यायन ', ' नागार्जुन, ' रंगेय राघव, ' सुप्रसिद्ध साहित्यकार हुए हैं।

" सामाजिक सद्भाव की दृष्टि से भगवतीचरण वर्मा, जी की महत्वपूर्ण कृतियों में ' चित्रलेखा ', ' थके पांव ', ' रेखा ', ' सीधी सच्ची बातें ', ' सबहिं नचावत राम गोसाईं. ', ' मरीचिका ' तीन वर्ष ', ' टेढ़े- मेढ़े रास्ते ', ' आखरी दांव ', ' भूले बिसरे चित्र ', ' वह फिर नहीं आई. ', ' सामर्थ्य और सीमा ' आदि इनकी सुप्रसिद्ध रचनाएं उल्लेखनीय हैं जिनमें इन्होंने बहुत ही मार्मिक रूप से सामाजिक सद्भावों को व्यक्त किया है। जिनका उदाहरण है-- तुम दोनों के मार्ग निर्धारित हो चुके। अब रहा मैं। तुम लोग मेरी चिंता न करो। जीवन में अनुभव की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी उपासना की। तुम अनुभव प्राप्त करो और मैं तपस्या करूँगा। आज से एक वर्ष बाद तुम दोनों मुझसे यहीं पर मिलोगे। और उस समय फिर से हम अपने निर्धारित कार्यक्रम पर चल सकेंगे। पर एक बात याद रखना जो बात अध्ययन से नहीं जानी जा सकती है, उसको अनुभव से जानने का प्रयत्न करने के लिए ही मैं तुम दोनों को संसार में भेज रहा हूँ। पर इस अनुभव में तुम स्वयं ही न बह जाओ, इसका ध्यान रखना पड़ेगा। संसार की लहरों की वास्तविक गति में तुम दोनों बहोगे। उस समय यह ध्यान रखना पड़ेगा कि कहीं डूब न जाओ।"^{३३}

वर्मा जी के उपरान्त आलोच्य युग में यशपाल जी का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इनका देश के विभाजन को लेकर बहुत ही हृदय विदारक उपन्यास ' झूठा सच ' बहुत ही सुप्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है जिसमें विभाजन की विभीषिका का बड़ा ही मार्मिक एवं यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया गया है। इनकी प्रमुख कृतियों में ' दादा कामरेड ', ' झूठा सच ', ' देशद्रोही ', ' पार्टी

कामरेड ', 'मनुष्य के रूप ', 'दिव्या ', 'अमिता' तथा ' तेरी मेरी उसकी बात ' आदि इनके सामाजिक सद्भाव के उपन्यास उल्लेखनीय हैं। आलोच्य उपन्यास में सामाजिक सद्भावना को ध्यान में रखते हुए देश की दुरावस्था के लिए जनता की अंदरूनी कमजोरियों एवं निर्जीवता को भी काफी उत्तरदायी बताया गया है। परंतु, उपन्यास के अंत तक पहुंचने पर यह सिद्ध होता है कि यह चित्रण वस्तुतः वस्तुस्थिति की सही पहचान करवाने के उद्देश्य से ही इस उपन्यास को पाठकों के समक्ष लाया गया है। उपन्यास के अंत में कांग्रेस के भ्रष्टाचारी परंतु प्रबलता प्राप्त नेता, सूद चुनाव में पराजित हो जाता है और इस परिणाम पर डॉक्टर नाथ गंभीर होकर टिप्पणी करता हुआ कहता है कि-- "गिल, अब तो विश्वास करोगे, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रियों की मुट्टी में नहीं है, देश की जनता के ही हाथ में है।"³⁸

इस युग के कथाकारों में अशक जी का भी बहुत ही विशिष्ट स्थान माना गया है क्योंकि ना तो इन्होंने मार्क्सवादी चेतना को अत्यधिक महत्त्व दिया है और ना ही मनोविश्लेषण पद्धति को अत्यधिक महत्त्व दिया है। इन्होंने मध्यम वर्गीय समाज के सामाजिक सद्भाव को एवम् मध्यम वर्गीय संघर्ष को अत्यधिक महत्त्व दिया है जिनकी छवि इनकी सुप्रसिद्ध रचनाओं में हमें देखने को मिल जाती है जैसे-- ' गिरती दीवारें ', ' पत्थर - अल - पत्थर ', ' शहर में घूमता आई.ना ', ' गर्म राख ', ' बड़ी - बड़ी आँखें ' आदि उपन्यासों में सामाजिक सद्भावना पाठक को पढ़ते ही प्राप्त होने लगती है।

"हर महीने मालती एक न दो नयी लेखिकाएं हिन्दी संसार को देती हैं महाशय गोपालदास ने गर्व - स्फुट - स्वर में कहा, " पंजाब में हिन्दी का प्रचार केवल लड़कियों में है, और लड़कियों में जो पत्रिका सबसे अधिक जाती है, उसका नाम है - 'मालती' । मालती के पाठकों ही में नहीं, लेखकों में भी लड़कियों की संख्या अधिक है आपके लिए उचित क्षेत्र यही है।" यह कहते हुए और आँख को तनिक सा दबाते हुए महाशय जी मुस्कुराए।"³⁹

अशक जी के उपरान्त स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी के सामाजिक सद्भाव के उपन्यासों की धारा में अमृत लाल नागर जी का भी अपने आप में एक विशिष्ट स्थान रहा है। इनकी दृष्टि सामाजिक समस्याओं के चित्रांकन में संतुलित, तटस्थ एवं निरपेक्षतावादी रही है। समाज में व्यक्ति के महत्त्व एवम् स्थान को स्वीकार करते हुए ये कहते हैं कि " हर बूंद का महत्त्व है क्योंकि बड़ी तो अनन्त सागर है, एक बूंद भी व्यर्थ क्यों जाए उसका सदुपयोग करो।"³⁶ इसी कारण वे व्यक्ति और समाज को दो इकाई. ना मानकर एक ही वस्तु के दो नामों की संज्ञा देते हैं।

अमृत लाल नागर जी ने भी अपने समय में बहुत सी रचनाएं रचीं जिनका मुख्य आधार इन्होंने सामाजिक परिवेश एवं भावनाओं को दिया है जो कि आज भी पठकों के में मस्तिष्क पर छाई. हुई रहतीं हैं। सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण इनकी कृतियां निम्नलिखित हैं - ' महाकाल ', ' सेठ बांकेमल ', ' बूंद और समुद्र ', ' अमृत और विष ', ' नाच्यो बहुत गुपाल ' आदि रचनाएं सामाजिकता से परिपूर्ण रचनाएं है। 'नाच्यो बहुत गुपाल' में नागर जी ने विशेष रूप से हरिजन को लेकर

सामाजिक सद्भावना की सामाजिक कुरीतियों और विषमताओं का हृदयग्रही चित्रण किया है। बूंद और समुद्र' में हम कथाकार अमृत लाल नागर के 'जीवन-दर्शन' को पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होता हुआ पाते हैं। नागर जी कहते हैं—"भावना ही अमृत है और विष भी। वही लक्ष्मी है और रम्भा भी। मन घोड़े के समान है और आत्मा सवारी। आत्मा को हम शिव के रूप में पाते हैं।"^{३७}

एक अन्य स्थान पर नागर जी का दार्शनिक चिंतन हमें और भी प्रभावित करता है और हम कथा-रास के साथ ही गंभीर 'जीवन-दर्शन' को प्राप्त कर पाने में समर्थ हो जाते हैं। इन पंक्तियों में इसकी पुष्टि होती हुई प्रतीत होती है तथा सामाजिक सद्भावना का परिपूर्ण समावेश दिखाई देता है—"मनुष्यता ही मनुष्य की आधारशिला है। मानवीय चेतना ही समस्त लोक को आलोकित कर अंधकार दूर कर सकती है।"^{३८}

सामाजिक सद्भावना के उपन्यासों की धारा के अन्तर्गत मार्क्सवादी चेतना से अत्यंत प्रभावित रचनाकार नागार्जुन जी एक ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्हें सुप्रसिद्ध रचनाकार यशपाल के अनुरूप इनको समाजवादी उपन्यासकार बहुत ही सहजता से कहा जा सकता है। इनके उपन्यासों का अधिकांश कलेवर बिहार के ग्रामीण अंचल से रचनाओं में समाहित किया गया है। इनकी सामाजिक सद्भावना संबंधी रचनाएं निम्नलिखित हैं - 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', 'दुखमोचन', 'कुंभीपाक', 'हीरक जयंती', 'उग्रतारा', 'बाबा बटेसर नाथ', 'वरुण के बेटे' आदि उल्लेखनीय है।

"दादी ने मलिकाइन के पैर पकड़ लिये—“आज से आप ही इस निभागे की माँ-बाप हुई गिरहथनी ! आपका जूठन खाकर इसका भाग चमकेगा...” अगले दिन से मैं काम करने लगा। बतला ही चुका हूँ, चौदह साल की उमर थी। यों खास काम मेरा भैंस चराना था, फिर भी और कई काम थे जैसे कि बच्चे को खेलाना, पानी भरना, बाहर बैठक में झाड़ू लगाना, दुकान से नून, तेल, मसाला लाना और मलिकाइन के पैर दबाना...”^{३९}

"कोयला वाले की मोटी आवाज गूँज उठी, “ल्ले...कोइला ह..लेक्....” फिर बाहर निकल आए। महीने का आखिरी सप्ताह था, पाँच सेर से ज्यादा लेने की गुंजाइश थी नहीं। खुद ही वह ठेले पर झुक गए और पछरिया ईंधन के छोटे-छोटे हल्के डले उठा-उठाकर तराजू वाले पटरे पर डालने लगे। कोयला वाला खुलकर हँसा और बोला, “घटिया माल नहीं रखता हूँ सरकार ! रुई की तरह फक-से आग पकड़ लेता है और एक बार सुलगा लीजिए फिर घण्टों जलता रहेगा..हार्डिज रोड, बेली रोड, कदमकुआँ, बोरिंग, रोड..हमीं लोग सबतर कोयला पहुँचाते हैं मालिक !...” “बड़े उस्ताद होते हो तुम लोग,” मुंगेरीलाल ने हाथ से हाथ झाड़कर कहा, “ज़रा-सी निगाह ओट हुई कि कोयले के बदले काले पत्थरों से ही तुम हमारी किचन भर दोगे ! दिन में दस दफे चूल्हा रूठेगा तो घर की मलिकाइन सर फोड़ लेगी...”^{४०}

वर्ग वैषम्य को मिटा कर समाज में एकता के आधार पर समाज की परिकल्पना करने वाले कथाकारों में 'रंगेय राघव' जी का भी अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है या फिर अन्य शब्दों में हम इनको समाजवादी परम्परा का उपन्यासकार भी कह सकते हैं। अपने जीवन के थोड़े ही समय में इस कथाकार ने लगभग तीस उपन्यासों का सृजन बहुत ही प्रसिद्धि के साथ किया है। जो की सामाजिक सद्भावना को अपने में संजोए हुए प्रतीत होती है। जिनमें से इनकी ये कुछ बहुत ही प्रमुख रचनाएं हैं 'घरौंदे', 'विषाद मठ', 'सीधा सादा रास्ता', 'जब जावेगी काली घटा', 'राई और पर्वत', 'हजूर तथा पाप का पथ', 'रत्ना की बात', 'सवाल', 'बोलते खंडहर', 'कब तक पुकारूं', 'पक्षी का आकाश' आदि। इनमें भी सामाजिक सद्भावना के कई पुट पाठक इन रचनाओं का स्मरण करके ग्रहण करता है।

"चित्रगंधा ने टोका, "भाभी ! आज इसन्े जो वंशी बजाई. तो फिर हिरन पास आ गए। गायें द्रुम-छाया में निकट आ गईं। मैं तो बैठी-बैठी अपनी सुधि भूल गई। मैं जैसे इस संसार में नहीं रही। जब बाँसुरी बजना बंद हुआ तो मुझे लगा, जैसे सब सुपने टूट गए, ढह गए। और जब यह बजाता है तो अपने आपको खो देता है। इधर लहरी गूँजनें लगीं, उधर रंगवेणी जैसे खिंची चली आई.। संगीत की वह मोहक तान रोम-रोम को बींध गई। रंगवेणी को तो तब ज्ञान हुआ जब कृष्ण ने वंशीवादन बंद किया।" भद्रवाहा सुनती रही। कहा, "चिरंजीव हो वत्स ! जैसे तूने बाँसुरी के रंध्रों में श्वास फूँककर जीवन की सृष्टि की है, वैसे ही तू इस जंबू द्वीप में भी जीवन भर सके, जहाँ आज अंधक कंस जैसे अत्याचारी और जरासंध जैसे निरंकुशों ने सबको आतंकित कर रखा है। तेरा सुमुख तो दिन-रात इन्हीं चिंताओं में लगा रहता है। तू वृष्णि है। हम गोप और कृष्ण एक ही हैं। पहले के भेद अब मिट गए हैं। अंधक गोपों को नीच समझते हैं। तू फिर वृष्णि और गोपों को कल्याण-मार्ग पर ला सके, यही मेरी कामना है।"४१

उपर्युक्त उपन्यासकारों के साथ - साथ इस युग के एक कथाकार और भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक सद्भावना को बड़े ही मार्मिक रूप से अपनी रचनाओं में स्थान प्रदान किया है। वो और कोई नहीं हमारे सुप्रसिद्ध रचनाकार मंजूर एहतेशाम जी हैं। इन्होंने इस युग में सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण रचनाएं रची हैं। इन्होंने अपनी रचना में कहीं समाज के परिवेश को दर्शाया है तो कहीं विभाजन के मर्म को उद्घाटित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक सद्भावना के अधिकतम पहलुओं को अपने साहित्य में समाहित करने का पुरजोर प्रयास किया है। इनकी सामाजिक सद्भाव से परिपूर्ण रचनाएं निम्नलिखित हैं:- 'कुछ दिन और', 'सूखा बरगद', 'दस्तान - ए - लापता', 'बशारत मंज़िल', 'पहर ढलते' आदि। सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करता इनका सुप्रसिद्ध उपन्यास 'सूखा बरगद' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

"शहर को राजधानी बनाया ही इसलिए गया कि धीरे-धीरे यहाँ मुसलमानों का पत्ता साफ हो जाए, हिंदू उनके सिर पर जूते बजाएँ, इधर राजधानी बनी उधर शहर का हिन्दू- मुस्लिम फसाद हुआ ' पंडित नेहरू मुस्लिम भाई, अंदर ही अंदर महासभाई और हमसे कहा जाता है हम सूअर खाएं। क्यों खाएं।"४२

आने वाले अध्याय में हम मंजूर एहतेशाम जी के सभी उपन्यासों में समाहित पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक सदभावना, धार्मिक सद्भावना, सांप्रदायिक सद्भावना, सांस्कृतिक सद्भावना, भाषाई. सद्भावना तथा राष्ट्र के प्रति सद्भावना पर विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

-:प्रेमचंदोत्तर कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक सद्भावना:-

प्रेमचंदोत्तर युगसन् १९३७ ई. के बाद का माना जाता रहा है तथा प्रेमचंद जी के पश्चात् प्रगतिवादी धारा का आगमन हुआ तथा यशपाल जी ने मार्क्सवाद के अनुरूप धन की विषमता पर प्रहार किया। इन पर सुप्रसिद्ध रचनाकार फ्रायड का भी प्रभाव माना जाता है। इनके सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण कहानी संग्रह निम्नलिखित हैं :- 'पिंजड़े की उड़ान', 'अभिषप्त', 'सच बोलने की भूल', 'होली का मजाक' आदि। इनकी कहानियाँ बहुत ही रोचक एवं मनोरंजक प्रतीत होती हैं और वर्ग संघर्ष एवं व्यंग्य के साथ - साथ इनमें सामाजिक सद्भावना भी प्रायः समाहित रही है। जो कि इनकी कहानी 'होली का मजाक' में स्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं।

"भाभी जी, मैंने आपसे कहा नहीं पर किलसिया की आदत अच्छी नहीं है। पहले भी देखा, इस बार भी दो बार पैसे उठ चुके हैं। परसों मैंने मेज़ की दराज में एक रुपया तेरह आना रख दिए थे, चार आने चले गए। इनके कोट की जेब में रुपए-रुपए के सत्ताइस नोट थे, एक रुपया उड़ गया। कमरे किलसिया ही साफ़ करती है। मैंने सोचा, इतनी-सी बात के लिए मैं क्या कहूँ?"^{४३}

यशपाल जी की एक अन्य कहानी 'मक्रील' भी एक ऐसी ही कहानी है जिसमें सामाजिक सद्भावना का समावेश किया गया है। जिसकी पंक्तियाँ --

"ग्लानि की राख के नीचे बुझती चिनगारियों को उमंग के पंखे से सजग कर, चतुर्दशी की चाँदनी में मक्रील का नृत्य देखने के लिए कवि तत्पर हुआ। घोषमयी मक्रील को कवि के यौवन से कुछ मतलब न था, और 'मूक मक्रील' ने पूजा के धूप-दीप के धूम्रावरण में कवि के नख-शिख को देखा ही न था। इसलिए वह दिन के समय संसार की दृष्टि से बच कर अपने कमरे में ही पड़ा रहा। चाँदनी खूब गहरी हो जाने पर मक्रील के पुल पर जाने के लिए वह शंकित हृदय से फुलवारी में आया। युवती प्रतीक्षा में खड़ी थी।"^{४४}

अज्ञेय जी ने व्यक्ति के नैतिक संघर्ष को प्रमुख स्थान दिया है। इनकी प्रारंभिक कहानियों में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति को उभरते हुए देखा गया किन्तु 'पठार का धीरज' में रोमांस के साथ ही साथ नए यथार्थ पर इस कहानी की रचना की गई। इनकी कहानियों में पाठक को बिम्ब, प्रतीक और नाटकीयता प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। 'विपथगा', 'शरणार्थी', 'ये तेरे प्रतिरूप' आदि इनके द्वारा रचित प्रमुख सामाजिक सद्भाव से परिपूर्ण कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानी 'विपथगा' एक ऐसी सामाजिक रचना मानी गई है जो सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण है जिसकी पुष्टि ये कुछ पंक्तियाँ करती हुई प्रतीत होती हैं:--

“दीप बुझता है तो धुआँ उठता है। किन्तु जब हमारे विस्तृत देश के भूखे, पीड़ित, अनाश्रित कृषक-कुटुम्ब सड़कों पर भटक-भटककर हेमावृत धरती पर बैठकर अपने भाग्य को कोसने लगते हैं, जब उनके हृदय में सुरक्षित आशा की अन्तिम दीप्ति बुझ जाती है, तब एक आह तक नहीं उठती। न जाने कब तक वह बुझी हुई राख पड़ी रहती है-पड़ी रहेगी! किन्तु किसी दिन, सुदूर भविष्य में, किसी घोर झन्झा से उसमें फिर चिनगारी निकलेगी! उसकी ज्वाला-घोरतम, अनवरुद्ध, प्रदीप्त ज्वाला!-किधर फैलेगी, किसको भस्म करेगी, किन नगरों और प्रान्तों का मानमर्दन करेगी कौन जाने?”^{४५}

“गुरु थोड़ी देर चुपचाप वत्सल दृष्टि से नवागन्तुक की ओर देखते रहे। फिर उन्होंने मृदु स्वर में कहा, “वत्स, तुम मेरे पास आये हो, इसे मैं तुम्हारी कृपा ही मानता हूँ। जिनके द्वारा तुम भेजे गये हो उनका तो मुझ पर अनुग्रह है ही कि उन्होंने मुझे इस योग्य समझा कि मैं तुम्हें कुछ सिखा सकूँगा। किन्तु मैं जानता हूँ कि मैं इसका पात्र नहीं हूँ। मेरे पास सिखाने को है ही क्या? मैं तो किसी को भी कुछ नहीं सिखा सकता, क्योंकि स्वयं निरन्तर सीखता ही रहता हूँ। वास्तव में कोई भी किसी को कुछ सिखाता नहीं है; जो सीखता है, अपने ही भीतर के किसी उन्मेष से सीख जाता है। जिन्हें गुरुत्व का श्रेय मिलता है वे वास्तव में केवल इस उन्मेष के निमित्त होते हैं और निमित्त होने के लिए गुरु की क्या आवश्यकता है? सृष्टि में कोई भी वस्तु उन्मेष का निमित्त बन सकती है?”^{४६}

क्षण-भर तक कोई नहीं बोला। फिर प्रधान ने कहा, “जो कायर सिद्ध होते हैं, विश्वास के अपात्र होते हैं, उनकी विद्वत्ता किस काम की? उनके लिए दुख या संवेदना न होनी चाहिए। वे राष्ट्र के शत्रु हैं, राष्ट्र की आह उन्हें लगेगी, अभिशाप की तरह मृत्यु-पर्यन्त उनका पीछा करेगी...”^{४७}

उपर्युक्त तीनों कहानियों में अज्ञेय जी ने अपने विचारों के साथ साथ समाज को महत्त्व देते हुए इन कहानियों की रचना की है जिससे पाठक के मन में समाज के प्रति सामाजिक भावना विद्यमान रहे।

इलाचन्द्र जोशी की कहानियों में भी सामाजिक सद्भावना सहित मनोवैज्ञानिक पक्ष का बहुत ही सुन्दर चित्र पाठकों के समक्ष प्रदर्शित होता है। इनके सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण कहानी संग्रह निम्नलिखित हैं:- 'रेल की रात', 'खंडहर की आत्माएं', 'डायरी के नीरस पृष्ठ' आदि। इनकी कहानी 'रेल की रात' की ये पंक्तियाँ सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करते हुए रची गई है :-

“महेंद्र सोचने लगा कि उसने जीवन में कितनी ही स्त्रियों को विभिन्न रूपों तथा विचित्र परिस्थितियों में देखा है, पर आज का यह बिल्कुल साधारण-सा अनुभव उसे क्यों ऐसा अपूर्व तथा अनुपम लग रहा है। वह सोच ही रहा था कि फिर उस विश्व-विजयिनी ने अपनी सुंदर विस्मित आँखों की रहस्यमयी उत्सुकता से भरी स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह मन ही मन संबोधित करते हुए कहने लगा, चिर अज्ञाता, चिर अपरिचिता देवी! तुम मुझसे क्या चाहती हो। तुम्हारी इस मर्मभेदिनी दृष्टि का क्या अर्थ है? दैवयोग से महाकाल के इस नगण्यतम क्षण में, जिसकी सत्ता महासागर में

एक क्षुद्रतम बुदबुदे के बराबर भी नहीं है, हम दोनों का आकस्मिक मिलन घटित हुआ है, और महासागर में बुदबुदे की तरह यह क्षण सदा के लिए विलीन हो जायगा। तथापि इतने ही असें में क्या तुम हम दोनों के जन्मांतर के संबंध से परिचित हो गई अथवा यह सब कुछ नहीं है? तुम्हारी आँखों की उत्सुकता का कोई मूल्य नहीं है, मेरी विह्वल भावुकता का कोई महत्व नहीं है! महत्वपूर्ण जो कुछ है, वह है तुम्हारे पास लेटे हुए व्यक्ति का खरटि भरना।"४८

उपेंद्रनाथ अशक की कहानियाँ मनोविश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक, एवम् सामाजिक सद्भावनाओं पर आधारित हैं। इनकी ' डाची ' और ' कांगड़ा का तेली ' कहानियाँ सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण कहानियाँ हैं। जिनमे से इनकी ' डाची ' नामक कहानी की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:--

" वह दिन-रात काम करता था बल्कि अपनी मृत पत्नी की उस धरोहर को, अपनी उस नन्हीं-सी गुड़िया को, भाँति-भाँति की चीजें ला कर प्रसन्न रख सके। जब भी कभी वह मंडी को आता, तो नन्हीं-सी रजिया उसकी टाँगों से लिपट जाती और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें उसके गर्द से अटे हुए चेहरे पर जमा कर पूछती - 'अब्बा, मेरे लिए क्या लाए हो?' तो वह उसे अपनी गोद में ले लेता और कभी मिठाई. और कभी खिलौनों से उसकी झोली भर देता। तब रजिया उसकी गोद से उतर जाती और अपनी सहेलियों को अपने खिलौने या मिठाई. दिखाने के लिए भाग जाती। यही गुड़िया जब आठ वर्ष की हुई, तो एक दिन मचल कर अपने अब्बा से कहने लगी - 'अब्बा, हम तो डाची लेंगे; अब्बा, हमें डाची ला दो। भोली-भाली निरीह बालिका! उसे क्या मालूम कि वह एक विपन्न साधनहीन मजदूर की बेटी है, जिसके लिए डाची खरीदना तो दूर रहा, डाची की कल्पना भी पाप है। रूखी हँसी हँस कर बाकर ने उसे अपनी गोद में लिया और बोला - 'रज्जो, तू तो खुद डाची है।' पर रजिया न मानी। उस दिन मशीरमाल अपनी साँड़नी पर चढ़ कर अपनी छोटी लड़की को अपने आगे बैठाए दो-चार मजदूर लेने के लिए अपनी इसी काट में आए थे। तभी रजिया के नन्हें-से मन में डाची पर सवार होने की प्रबल आकांक्षा पैदा हो उठी थी, और उसी दिन से बाकर की रही-सही अकर्मण्यता भी दूर हो गई थी।"४९

विष्णु प्रभाकर ने अपनी कहानियों में नई शैली में पुराने मूल्यों को स्थापित करने का पूर्ण रूप से प्रयास किया है। इनकी कहानी ' धरती अब भी घूम रही है ', ' मेरा वतन 'इनके नए बोध की सामाजिक कहानी है। जिसमें समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। जिसकी सामाजिक सद्भावना परक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

" वह अब उस कुर्सी के बारे में सोचने लगा जिस पर वह बैठा करता था। उसे कमरे की दीवार के साथ-साथ दरवाजे के पायदान की याद भी आ गयी। कभी-कभी ये छोटी-छोटी तंफसीलें आदमी को कितना सकून पहुंचाती हैं। इसीलिए वह सब-कुछ भूलकर सदा की तरह झूमता हुआ आगे बढ़ा, पर तभी जैसे किसी ने उसे कचोट लिया। उसने देखा कि लॉन की हरी घास मिट्टी में समा गयी है।

रास्ते बन्द हैं। केवल डरावनी आँखों वाले सैनिक मशीनगन संभाले और हेलमेट पहने तैयार खड़े हैं कि कोई आगे बढ़े और वे शूट कर दें। उसने हरी वर्दी वाले होमगार्डों को भी देखा और देखा कि राइफल थामे पठान लोग जब मन में उठता है तब फायर कर देते हैं। वे मानो छड़ी के स्थान पर राइफल का प्रयोग करते हैं और उनके लिए जीवन की पवित्रता बन्दूक की गोली की सफलता पर निर्भर करती है। उसे स्वयं जीवन की पवित्रता से अधिक मोह नहीं था। वह खंडहरों के लिए आँसू भी नहीं बहाता था। उसने अग्नि की प्रज्ज्वलित लपटों को अपनी आँखों से उठते देखा था। उसे तब खाण्डव-वन की याद आ गयी थी जिसकी नींव पर इन्द्रप्रस्थ-सरीखे वैभवशाली और कलामय नगर का निर्माण हुआ था। तो क्या इस महानाश की उस कला के कारण महाभारत सम्भव हुआ, जिसने इस अभागे देश के मदोन्मत, किन्तु जर्जरित शौर्य को सदा के लिए समाप्त कर दिया। क्या आज फिर वही कहानी दोहरायी जानेवाली है।"^{५०}

सन् १९५० ई. के बाद दोनों प्रकार की कहानियों की रचना की गई तथा कुछ में विघटित मूल्यों के कारण त्रास और अनास्था का चित्रण विद्यमान था तो कुछ कहानियों में सामाजिक सद्भावना के साथ - साथ पुरातन मूल्यों की स्थापना का भी सफल प्रयत्न भी किया गया था।

सन् १९५५ ई. में ' कहानी ' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसी समयसन् १९५३ -१९५७ ई. में नई कहानी नाम से कहानी की अपनी एक अलग पहचान उभरकर पाठकों के सामने आई। इसके बाद छठे दशक में आंचलिक कहानियों का आगमन हुआ। ' शिवप्रसाद जी की आरम्भिक कहानियाँ - ' दादा ', ' दादी ', ' भाई ' आदि सुप्रसिद्ध कहानियाँ हैं इनकी इन कहानियों में प्राचीनता विद्यमान है। परंतु ' मुर्दा सराय ', ' नन्हों, आदि कहानी संग्रहों में यथार्थ के साथ ही साथ सामाजिकता की भावना भी अधिक विद्यमान है जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:-

" पाँच साल का समय कुछ कम तो नहीं होता। लंबे-लंबे पाँच साल! पूरे पाँच साल के बाद आज रामसुभग को भौजी की याद आई. है। पाँच साल में उसने एक बार भी कुशल-मंगल का हाल नहीं दिया। एक बार भी नहीं पूछा कि भौजी जीती है या मर गई। जब अपना ही नहीं रहा हाल-चाल लेनेवाला, तो दूसरा कौन पूछता है किसे? नन्हों सहुआइन ने चारपाई. के पास से माची खींची और उस पर बैठ गई। हल्दी-सनी अँगुलियों के निशान 'कार्ड' पर उभर आए थे - जैसे वह किसी के शादी-ब्याह का न्यौता था। शादी-ब्याह का ख्याल आते ही नन्हों सहुआइन की आँखें चलवे मछली-सी चिलक उठीं। जाने कितनी बार सोचा है उन्होंने अपनी शादी के बारे में। कई बार सोचा, इस दुखदायी बात को फिर कभी न सोचूँगी। जो भाग में न था उस पर पछतावा क्या? पर वह औरत क्या अपनी शादी पर न सोचे और एक ऐसी औरत जिसकी शादी उसकी जिंदगी का दस्तावेज बन कर आई. हो, जिंदगी सिर्फ उसकी गिरो ही नहीं बनी उसने तो नन्हों के समूचे जीवन को रेतभरी परती की तरह वीरान कर दिया।"^{५१}

मार्कण्डेय जी की ग्रामांचल की कथाओं में अतीतोन्मुखता और इसके बाद की कहानियों में इन्होंने गावों में आए वर्ग संघर्ष को बहुत ही मार्मिक चित्रों द्वारा उभारा है एवम् इसमें उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक सद्भाव को बहुत ही मनोरम रूप प्रदान किया है अथवा इनकी कहानी 'गरीबों की बस्ती' सामाजिक सद्भावना के लिए बहुत प्रसिद्ध है जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:-

" सारा बंगाल पैशाचिक नरसंहार का केन्द्र बन गया था। चारों ओर हिन्दू-मुसलमान की भावना विषैली सर्पिणी की भाँति लोगों को डस रही थी। मासूम बच्चे माताओं के आगे ही जला डाले जाते थे। माताओं के स्तन काट लिये जाते थे; कन्याओं के साथ बलात्कार किया जाता था। चारों ओर घर-घर में, हृदय-हृदय में साम्प्रदायिकता का विषम ज्वर फैल गया था। पर यह बस्ती अब भी अपने आन्तरिक प्रदेश में वैसी ही थी। यद्यपि बाह्य रूप में भीषण समाचारों द्वारा अन्तर अवश्य था। लोगों ने आना-जाना बन्द कर दिया था। नूरी भी बन्दी की भाँति अपने तृण कुटीर में पड़ी सोचा करती, यही है सम्पत्तिवालों का खिलवाड़ जो हमारी पवित्र बंगभूमि को नीच साम्प्रदायिकता की प्रचण्ड अग्नि में झोंक रहा है। वह अपने को भूल-सी जाती और कह उठती "कमल! तुम भी तो धनिक हो; क्या तुम भी ऐसा करते होगे? शायद तुम इस जीवन पर तरस खाते होगे पर देखो! आँखें खोल कर देखो! कितना मधुर है यह; क्योंकि इसी दरिद्रता के कारण देश में फैले हुए बहुत-से गरीबों का साथ हो पाता है। उनके दुखों को मनुष्य समझ पाता है। इसीलिए मैं कहती हूँ-- "रहने दो मुझे, मैं यहीं रहूँगी। मुझे यही जीवन मिलेगा। मैं कर्मों के बीच, संघर्षों के बीच जी लूँगी। मुझे क्षमा करो, बाबू जी।" और यही सोचते-सोचते वह उसी कुटीर के तिनकों में अपनी दृष्टि बिखेर देती।"^{५२}

फणीश्वर नाथ रेणु जी ने अपने कहानी संग्रह ' गाँव की धूल माटी ' तथा ' आंगन की धूप ' आदि में ग्रामीण क्षेत्र का पूरा अंचल बहुत ही सजीवता से पाठकों के समक्ष उभारा है तथा ' लाल पान की बेगम ' और ' तीसरी कसम ' इनकी सामाजिक सद्भाव की बहुत ही प्रसिद्ध कहानियाँ हैं अथवा इनकी कहानी 'लाल पान की बेगम' की निम्न पंक्तियाँ सामाजिक सद्भावना को व्यक्त करती हुई प्रतीत होती हैं :-

" बिरजू के बाप पर बहुत तेजी से गुस्सा चढ़ता है। चढ़ता ही जाता है। ...बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबर गणेश घरवाला उसे मिला। कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने? कोल्हू के बैल की तरह खट कर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ, कभी एक पैसे की जलेबी भी ला कर दी है उसके खसम ने! ...पाट का दाम भगत के यहाँ से ले कर बाहर-ही-बाहर बैल-हटटा चले गए। बिरजू की माँ को एक बार नमरी लोट देखने भी नहीं दिया आँख से। ...बैल खरीद लाए। उसी दिन से गाँव में ढिंढोरा पीटने लगे, बिरजू की माँ इस बार बैलगाड़ी पर चढ़ कर जाएगी नाच देखने! ...दूसरे की गाड़ी के भरोसे नाच दिखाएगा!..."^{५३}

मोहन राकेश जी ने आधुनिकता के नाम पर तनावों की कहानियों की रचना करी है। जो कि सामाजिक परिवेश के द्वारा इन्होंने अपनी रचनाओं को रचने का प्रयास किया है। इनकी तनावों से परिपूर्ण रचना 'मलबे का मालिक' है। इनकी इस कहानी को समाज के साहित्य जगत में एक विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। इसके अलावा इनके सामाजिक सद्भाव से परिपूर्ण कहानी संग्रह भी बहुत प्रसिद्ध हैं जो निम्नलिखित हैं - 'नए बादल', 'जानवर और जानवर', और एक ज़िन्दगी' आदि। इनकी कहानी मलबे के मालिक में सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करते हुए पुष्प पाल सिंह जी ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लिखा है कि - जब मलबे का मालिक होने का दंभ पालने वाले रक्खे और गनी मियां की भेंट होती है। गनी चिराग के दोस्त रक्खे पहलवान से मिलने को जिस प्रकार हुमककर आगे बढ़ता है, उसके विपरीत रक्खे उतने ही ठंडेपन से उसका 'सामना' करता है, 'मिलता' तो है ही नहीं। उससे मिलने को आतुर गनी की बांहें रक्खे के आलिंगन के लिए तरसती हुई उठी की उठी रह जाती हैं। बैठने के लिए वह ऐसा आधार ढूंढ़ रहा है जो पत्थर (सिल, कुएं की सिलें) हो कर रह गया है। क्या विडम्बना, ड्रैमेटिक ऑयरनी है कि गनी अपने बेटे चिरागदीन के कातिल से ही पूछता है कि यह हुआ कैसे? 'तुम लोग उसके पास थे, सबमें भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी, अगर वह चाहता, तो वह तुझमें से किसी के घर में ही छिप सकता था? उसे इतनी भी समझ नहीं आती?' स्थिति का कैसा क्रूर मज़ाक है कि साढ़े सात साल बाद भक्षक से ही रक्षक के व्यवहार की अपेक्षा, अपेक्षा नहीं गहरा विश्वास है। उसके रहते ही तो चिराग को यह विश्वास था कि 'कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।' विश्वास की यह आस्था उस परिवार को समाप्त कर देने वाले रक्खे को भी भीतर तक हिला जाती है और वह विचलित हो कर 'हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तू ही है, तू ही है!' पुकार उठता है। गनी का यह कहना 'मैंने तुमको देख लिया, तो चिराग को देख लिया' रक्खे को भी भिगो देता है। वह मानो अपनी गलती का अहसास करता हुआ जाते हुए गनी को दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता है नमस्कार करता है। गनी के स्वागत के समय और अब विदा देते समय की रक्खे की ये भिन्न मुद्राएं कहानी में बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेखक कहीं भी रक्खे के बदले मिजाज़ का वर्णन नहीं करता अपितु सर्वत्र उसकी अभिव्यक्ति, विभिन्न क्रिया-कलापों के द्वारा करता है। इस प्रकार कहानी में सांप्रदायिक एकता की जो विचार-सारणि आदि से अंत तक अनुस्यूत है, वह कहीं भी आरोपित रूप में नहीं आती अपितु कहानी के बीच अंतःसलिला की तरह प्रवाहित होती है।"^{५४}

इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार चन्द्रगुप्त विद्यालंकर जी की रचना ' एक और हिन्दुस्तानी का जन्म इसी युग में हुआ ', अशक जी की ' टेबुल लैप ' आदि कहानियाँ आदर्श पर आधारित हैं। इनके अलावा राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित ' जहाँ लक्ष्मी कैद है ', ' प्रतीक्षा ', अभिमन्यु की आत्महत्या ', आदि कहानी संग्रह भी सामाजिक सद्भावना के संग्रह हैं। इनकी 'प्रतीक्षा' कहानी सामाजिक सद्भावना की सुप्रसिद्ध कहानी है जिसके कुछ अंश निम्न रूप से हैं:-

" 'बिरादरी बाहर' में रिटायर्ड पिता की इच्छा के विरुद्ध बेटी ने विजातीय विवाह कर लिया है, अपने पति के साथ दो साल बाद लौटी है तो पूरा परिवार उसकी आवभगत में जुट गया है और अपने ही घर में उपेक्षित और अलग-थलग पड़ गए पिता खुशी के माहौल में आइसबर्ग-सा तैरते हैं। 'ढोल' और 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' की पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। 'ढोल' दृश्यमान के पीछे घुटती अदृश्य हकीकतों की फंतासी है। 'सिंहवाहिनी' एक दूसरी ढोल है। ये काफ़का से लड़ते और बचते हुए दिन थे। जहाँ एक कवच है तो दूसरी नकाब... 'संबंध' से लेकर 'ढोल' और 'सिंहवाहिनी' जैसी प्रायः सभी कहानियों में एक गुम होते हुए व्यक्ति की अस्मिता के ट्रेस आउट करने की आध्यात्मिक-सी कोशिश है और इस कोशिश पर पांव रखकर यथार्थ को चिह्नित करने का अभियान। राजेन्द्र का कथाकार इस अर्थ में औरों से भिन्न है कि मिथों की पारंपरिक अर्थों तक सीमित रखना उसे गंवारा नहीं, वह उनके नए-नए एस्थेटिक सेंस निकालने और प्रतिभा गढ़ने में यकीन करता है, मसलन यहाँ ताजमहल 'प्रेम' का नहीं 'बिछड़ने' का ढोल मात्र 'आवाज' या उसकी 'पोला'के लिए नहीं, कवच के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह उनके खोजी, खिलंदड़े, जिज्ञासु और अनुसंधित्सु और उससे बढ़कर मूर्तिभंजक बागी मन की बानगी है।" ५५

कमलेश्वर जी की भी कुछ रचनाएं हैं जिनमें सामाजिक सद्भावना का हमें अंश प्राप्त हो जाता है इनकी ' कितने पाकिस्तान', ' देवी की माँ ', तथा ' नीली झील ' आदि कहानियाँ सामाजिक सदभाव के लिए बहुत अधिक प्रसिद्ध कहानियाँ मानी गई हैं। पाकिस्तान हमारे बीच बार-बार आ जाता है। यह हमारे या तुम्हारे लिए कोई मुल्क नहीं है, एक दुखद सच्चाई. का नाम है। वह चीज या वजह है जो हमें ज्यादा दूर करती है, जो हमारी बातों के बीच एक सन्नाटे की तरह आ जाती है। जो तुम्हारे घरवालों, रिश्तेदारों या धर्मवालों के प्रति दूसरों के एहसास की गहराई. को उथला कर देती है। तब उन दूसरों को उनके इस कोई के दुख उतने बड़े नहीं लगते जितने वे होते हैं, उनकी खुशी उतनी खुशी नहीं लगती जितनी वह होती है। कहीं कुछ कम हो जाता है। एहसास की कुछ ऐसी ही आ गयी कमी का नाम शायद पाकिस्तान है यानी मेहंदी के फूल हों, पर हवा न चले, या कोई फूँक मारकर उनमें गन्ध न पैदा करे। जैसे कि फूल हों, रंग न हो। रंग हो गन्ध न हो। गन्ध हो, हवा न हो। यानी एहसास की रुकी हुई हवा ही पाकिस्तान हो।" ५६

इनके अलावा भी इस युग में कई रचनाकार हुए हैं जिन पर सामाजिक सद्भावना के साथ रोमानियत अक्सर हावी रही है। जिनमें से कुछेक प्रसिद्ध रचनाकार निम्नलिखित हैं जैसे :- नरेश महता, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धर्मवीर भारती, कुँवर नारायण , रामदरश मिश्र आदि।

कुछ लेखिकाओं ने भी हिन्दी - कहानी में अपना बहुत ही रुचिकर योगदान प्रदान किया है तथा अपनी रचनाओं में सामाजिक सद्भावना को उपयुक्त स्थानों पर संजोते हुए भी चली आई हैं। उन प्रसिद्ध लेखिकाओं में से सुप्रसिद्ध लेखिका ' मन्मू भंडारी ' जी हैं इन्होंने अपने कहानी संग्रह ' मै हार गई ' तथा ' यही सच है ' आदि में सामाजिक सद्भावना को व्यक्त किया है। जिसकी पुष्टि करती हुई कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:--

" इच्छा होती है, कह दूँ - "तुम्हें दोस्तों का खयाल है, उनके बुरा मानने की चिंता है, बस मेरी ही नहीं!" पर कुछ कह नहीं पाती, एकटक उसके चेहरे की ओर देखती रहती हूँ उसके साँवले चेहरे पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं। कोई और समय होता तो मैंने अपने आँचल से इन्हें पोंछ दिया होता, पर आज नहीं। वह मंद-मंद मुस्कुरा रहा है, उसकी आँखें क्षमा-याचना कर रही हैं, पर मैं क्या करूँ? तभी वह अपनी आदत के अनुसार कुर्सी के हत्थे पर बैठकर मेरे गाल सहलाने लगता है। मुझे उसकी इसी बात पर गुस्सा आता है। हमेशा इसी तरह करेगा और फिर दुनिया-भर का लाड़-दुलार दिखलाएगा। वह जानता जो है कि इसके आगे मेरा क्रोध टिक नहीं पाता। फिर उठकर वह फूलदान के पुराने फूल फेंक देता है, और नए फूल लगाता है। फूल सजाने में वह कितना कुशल है! एक बार मैंने यों ही कह दिया था कि मुझे रजनीगंधा के फूल बड़े पसंद हैं, तो उसने नियम ही बना लिया कि हर चौथे दिन ढेर-सारे फूल लाकर मेरे कमरे में लगा देता है। और अब तो मुझे भी ऐसी आदत हो गई है कि एक दिन भी कमरे में फूल न रहें तो न पढ़ने में मन लगता है, न सोने में। ये फूल जैसे संजय की उपस्थिति का आभास देते रहते हैं।"^{५७}

इसी युग की प्रसिद्ध रचनाकार शिवानी जी ने भी अपनी रचनाओं में नारी - मनोविज्ञान का चित्रण प्रस्तुत किया है तथा उषा प्रियम्बदा जी आधुनिक बोध की कहानीकार हैं इनके अलावा कृष्णा सोबती जी का भी नाम सामाजिक सद्भाव के कहानीकारों में उल्लेखनीय है। " शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा, "नहीं शाहनी..." शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिन्तित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर..." शाहनी कहते-कहते रुक गयी। आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है। शाहजी को बिछुड़े कई साल बीत गये, पर आज कुछ पिघल रहा है शायद पिछली स्मृतियाँ...आंसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हसैना की ओर देखा और हल्के-से हंस पड़ी। और शेरा सोच ही रहा है, क्या कह रही है शाहनी आज! आज शाहनी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर

सकता। यह होके रहेगा क्यों न हो? हमारे ही भाई-बन्दों से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियां तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेर की आँखों में उतर आयी। गंडासे की याद हो आयी। शाहनी की ओर देखा नहीं-नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कत्ल कर चुका है पर वह ऐसा नीच नहीं...सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आँखों में तैर गये। वह सर्दियों की रातें कभी-कभी शाहजी की डांट खाके वह हवेली में पड़ा रहता था। और फिर लालटेन की रोशनी में वह देखता है, शाहनी के ममता भरे हाथ दूध का कटोरा थामे हुए 'शेरे-शेरे, उठ, पी ले।' शेरे ने शाहनी के झुर्रियां पड़े मुंह की ओर देखा तो शाहनी धीरे से मुस्करा रही थी। शेरा विचलित हो गया। 'आखिर शाहनी ने क्या बिगाड़ा है हमारा? शाहजी की बात शाहजी के साथ गयी, वह शाहनी को जरूर बचाएगा। लेकिन कल रात वाला मशवरा! वह कैसे मान गया था फिरोज़ की बात! 'सब कुछ ठीक हो जाएगा सामान बांट लिया जाएगा!'"^{५८}

सातवें दशक के कहानीकार यथार्थ को अधिक महत्व देते हुए प्रतीत होते हैं तथा इस दशक के कई कहानीकार ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक सद्भावना को अपनी रचनाओं में समाहित किया है। जिनमें से कुछ सुप्रसिद्ध रचनाकारों के नाम इस प्रकार हैं ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, गंगा प्रसाद विमल, गिरिराज किशोर, रवीन्द्र कालिया, महेंद्र भल्ला, ज्ञान प्रकाश, काशीनाथ सिंह आदि ।

" प्रकाश अपनी योजनाओं के बारे में बिस्तार से बात करना चाहता था, मगर उसने पाया कि बैंक का मैनेजर सहसा आध्यात्मिक विषयों में दिलचस्पी लेने लगा है। वह धूप में कहकहे लगा रहे बैंक के कर्मचारियों की ओर टकटकी लगा कर देख रहा था और जैसे दीवारों से बात कर रहा हो, 'तुम नौजवान आदमी हो, मेरी बात को समझ सकते हो। यहाँ तो दिन-भर अनपढ़ व्यापारी आते हैं, जिन्हें न स्वामी दयानन्द में दिलचस्पी है, न अपनी सांस्कृतिक विरासत में। वेद का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान से हमारा रिश्ता कितना सतही होता जा रहा है, इसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं। प्रकृति की बड़ी-बड़ी शक्तियों में आर्य लोग दैवी अभिव्यक्ति देखते थे। आज क्या हो रहा है, आप अपनी आँखों से देख रहे हैं। बिजली चली गयी और इनसे काम नहीं होता। कोई इनसे काम करने को कहेगा, ये नारे लगाने लगेंगे। मैं इस से चुप रहता हूँ। किसी से कुछ नहीं कहता। आप चले आये, बहुत अच्छा हुआ, नहीं तो मैं गुस्से में भुनभुनाता रहता और ये सब मुझे देख-देख कर मजा लेते। मैं पहले ही 'एक्सटेंशन' पर हूँ। नहीं चाहता इस बुढ़ापे में प्राविडेंट फंड और ग्रेच्युटी पर कोई आँच आये। आपकी तरह मैं भी मजा ले रहा हूँ। मैंने बिजली कम्पनी को भी फोन नहीं किया। वहाँ कोई फोन ही नहीं उठाएगा। इन सब बातों पर मैं ज्यादा सोचना ही नहीं चाहता। पहले ही मन्द रक्त चाप का मरीज हूँ। दिल दगा दे गया, तो यहीं ढेर हो जाऊँगा। देवों का तर्पण तो दूर की बात है, यहाँ कोई पितरों का तर्पण भी नहीं करेगा। आप यह सब सोच कर उदास मत होइए। आप एक प्रतिभासम्पन्न नवयुवक हैं, तकनीकी आदमी हैं। बैंक से ऋण ले कर अपना धन्धा जमाना चाहते हैं। जरूर जमाइए। पुरुषार्थ में बड़ी शक्ति है। हमारा दुर्भाग्य यही है, हम पुरुषार्थहीन होते जा रहे हैं। आप

हमारे बैंक का फोल्डर पढ़ कर आये हैं, मेरा फर्ज है, मैं आपकी पूरी मदद करूँ। ऋण के लिए एक फार्म है, जो आपको भरना पड़ेगा। इधर कई दिनों से वह फार्म स्टॉक में नहीं है। मैंने मुख्य कार्यालय को कई स्मरण-पत्र दिए हैं कि इस फार्म की बहुत माँग है। दो सौ फार्म तुरंत भेजे जायें। फार्म मेरे पास जरूर आये मगर वे नया एकाउंट खोलने के फार्म थे। आज की डाक से यह परिपत्र आया है। आप स्वयं ही पढ़ कर देख लीजिए। मैं अपने ग्राहकों से कुछ नहीं छिपाता। मैं खुले पत्तों से ताश खेलने का आदी हूँ। इस परिपत्र में लिखा है कि बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद पढ़े-लिखे तकनीकी लोगों को बैंक से अधिक-से-अधिक आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। आपका समय नष्ट न हो, इससे मेरी राय यही है कि आप कहीं से उस फार्म की प्रतिलिपि प्राप्त कर लें, उसकी छह प्रतिलिपियाँ टंकित करा लें, मुझसे जहाँ तक बन पड़ेगा, मैं आपके लिए पूरी कोशिश करूँगा। वैसे निजी तौर पर आपको बता दूँ, मेरे कोशिश करने से कुछ होगा नहीं। मैं कब से कोशिश कर रहा हूँ कि इस ब्रांच के एकाउंटेंट का तबादला हो जाये, मगर वह आज भी मेरे सर पर सवार है। सारे फसाद की जड़ भी वही है। गर्मी भी उसे ही सबसे ज्यादा लगती है। पुराना आदमी है, अफसरों से ले कर चपरासियों तक को पटाये रखता है, यही वजह है कि उस पर कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही नहीं की जा सकती। दो ही वर्षों में मैंने उसकी 'कॉन्फीडेंशल फाइल इतनी मोटी कर दी है कि अकेले उठती नहीं। मगर आज कागजों का वह अर्थ नहीं रह गया, जो अंग्रेजों के जमाने में था। कागज का एक छोटा-सा पुर्जा जिन्दगी का रुख ही बदल देता था। ऋण की ही बात ले लीजिए। यह सब 'पेपर एनकरेजमेंट' यानी कागजी प्रोत्साहन है। यही वजह है कि हिन्दुस्तान में कागज का अकाल पड़ गया है। राधे बाबू ने गेहूँ या तेल से उतनी कमाई. नहीं की, जितनी आज कागज से कर रहे हैं।" ^{५९}

इनके अलावा कुछेक कहानीकार और भी उल्लेखनीय हैं जिनमें सुदर्शन नारंग, महीप सिंह, नरेंद्र कोहली, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, निरुपमा सेवती, दीप्ति खंडेवाल, सुरेश सिंह, रमेश उपाध्याय आदि सभी लेखक आधुनिकता बोध के कहानीकार हैं और ये सभी सामाजिक सद्भाव के साथ अपनी रचनाएं रच चुके हैं।

" इस बार भाभी ने फोन पर कहा, 'भावना, हमारा बहुत अच्छा दोस्त रिचर्ड भारत जा रहा है एक हफ्ते राजस्थान घूमकर वह इलाहाबाद पहुँचेगा एक हफ्ते वह वहाँ रहेगा उसके आराम का पूरा ध्यान रखना घर की सफाई. कर लेना कहीं भी गंदगी, मच्छर, छिपकली न दिखने पाए रिचर्ड डॉक्टर है तुम्हारे भाई उसे साथ लेकर आते, पर उन्हें अभी छुट्टी नहीं मिल रही है हमें तुम पर भरोसा है जैसे हमारे आने पर मेहमाननवाजी करती हो, वैसी ही करना।' " ^{६०}

इन सभी के साथ इस युग के एक प्रसिद्ध कहानीकार मंजूर एहतेशाम जी भी हैं इन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक सद्भाव को महत्व देते हुए रचनाएं की हैं। इन्होंने तीन कहानी संग्रहों की रचना की है तथा अभी भी ये कथा-साहित्य के क्षेत्र में रचनाएं कर रहे हैं। जिसमें सामाजिक सद्भाव पूर्ण रूप से समाहित है। इनके तीन प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं-- पहला 'रमजान में मौत' सन्

१९८२ ई. में,' तासबीह 'सन् १९९८ ई. में, एवम् तमाशासन् २००१ ई. में आदि। अपने इन कहानी संग्रहों में इन्होंने सामाजिक सद्भाव को अपने पात्रों के माध्यम से बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णित किया है।

" पल भर के लिए मानो सब कुछ रुक गया। असद मियां का जिस्म बेहरकत हो गया था-- पर सुहेला भाभी की चीख से पहले ही असद मियां ने आँखें खोल दीं, फिर बड़े मासूमाना अंदाज में उन्होंने अपने चारों तरफ इकट्टी भीड़ पर नजर डाली।"^{६१}

इस प्रकार हिन्दी कहानी निरंतर दिन - प्रतिदिन विकसित होती जा रही है। तथा इनके द्वारा राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का निरंतर बदलाव भी हो रहा है एवं इससे हिन्दी कहानी में नित्य नई भावनाएं पाठकों के मन में जागृत हो रही हैं तथा मानवीय संवेदनाओं को गहराई से उभारने के अतिरिक्त आज की कहानी भाषा - शिल्प की दृष्टि से भी एक सामान्य मानव के साथ अधिक निकटता का संबंध जोड़ने का निरंतर प्रयास कर रही है और सामाजिक सद्भावना को परिपूर्ण कर रही है।

निष्कर्ष:- अंततः हम यह कह सकते हैं कि हिंदी कथा-साहित्य में कई साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने अपने-अपने समय में सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण रचनाएँ रची हैं और साहित्य के धरातल पर अलग छाप छोड़ी है। प्रेमचंदोत्तर युग के सभी साहित्यकारों में से एक साहित्यकार मंजूर एहतेशाम जी भी थे जिन्होंने अपनी रचनाओं को आत्मकथात्मक बताते हुए अपनी रचनाओं में अपनी आपबीती लिखी है इनकी रचनाएँ इस युग के सभी लेखकों की रचनाओं से अलग स्थान प्राप्त किए हुए हैं।

संदर्भ सूची

- १:- सैयद इंशा अल्लाह खां - रानी केतकी की कहानी। [भारत - दर्शन (हिन्दी पत्रिका-
www.bharatdarshan.co.nz]
- २:- शोध:प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी कथा साहित्य में उभरता समाज और शैल्पिक प्रविधियाँ /डॉ. राजेश
कुमारी कौशिक साहित्य-संस्कृति की त्रैमासिक ई.-पत्रिका 'अपनी माटी' (ISSN 2322-0724
Apni Maati) वर्ष-2 ,अंक-15 ,जुलाई.-सितम्बर,2014
- ३:- पंडित गौरीदत्त शर्मा - देवरानी जेठानी की कहानी (www.zindaginama.com, post। -
२५/०३/२०१५ राजू भाटिया द्वारा रचित)
- ४:- ई.श्वरी प्रसाद व कल्याण राय - वामा शिक्षक,(www.hindisamay.com, पृष्ठ संख्या-६७)
- ५:- लज्जा राम शर्मा मेहता, शुशीला विधवा, पृष्ठ संख्या- ११६
- ६ :- श्रद्धा राम फिल्लौरी - भाग्यवती [www.deshbandhu.co.in (देशबंधु 1959 post:- ०१
-०६-२०१४ time- ३:४५:१३)]
- ७:- लाला श्री निवासदास - परीक्षा गुरु, www.hindisamay.com/उपन्यास
- ८:- शोधार्थी की प्रत्यक्ष रूप में वार्ता डॉ. राजेश कुमारी कौशिक, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिनांक-
२३- ०४-२०१६
- ९ :- श्रद्धा राम फिल्लौरी - भाग्यवती [www.deshbandhu.co.in (देशबंधु 1959 post:- ०१
-०६-२०१४ time- ३:४५:१३)]
- १०:- शोधार्थी की प्रत्यक्ष रूप में वार्ता डॉ. राजेश कुमारी कौशिक, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिनांक-
२३- ०४-२०१६
- ११:- श्रद्धा राम फिल्लौरी - भाग्यवती [www.deshbandhu.co.in (देशबंधु 1959 post:-
०१-०६-२०१४ time- ३:४५:१३)]
- १२:- लाला श्री निवासदास-परीक्षा गुरु, www.hindisamay.com,उपन्यास-प्रकरण- ७
- १३:- कनक कुसुम व मस्तानी - किशोरलाल गोस्वामी, पृष्ठ संख्या - ५१
- १४:- ठाकुर जगनमोहन सिंह - श्यामा स्वप्न,www.hindisamay.com/उपन्यास।

१५:- लज्जाराम शर्मा- आदर्श हिन्दू (तीसरा भाग) ' इंडिया प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग' प्रकरण - ४५
पृष्ठ संख्या - १६-१७

१६:- नूतन ब्रम्हचारी- बालकृष्ण भट्ट, प्रस्तुति-धनंजय भट्ट, पृ. 68.

१७:- बाबू देवकीनंदन खत्री विरचित - काजर की कोठरी, शारदा प्रकाशन नई दिल्ली- ११०००२,
पृष्ठ संख्या-१४।

१८:- श्री किशोरीलाल गोस्वामी-हृदय हारिणी, श्री सुदर्शन प्रेस , वृंदावन पृष्ठ संख्या - ६।

१९:- हरिऔध समग्र खंड-5 ठेठ हिंदी का ठाट (उपन्यास) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (I)
(<http://hindisamay.com/hariodh%20Samagra/Theth-hindi-ka-That-intro.htm>)

२०:- राधाकान्त- बाबू बृजनंदन सहाय, चौथा परिछेद, हरिदास एण्ड कम्पनी न. २०१ हैरीसन्
रोड, कलकत्ता, पृष्ठ संख्या -२२

२१:- गोरा, रवींद्रनाथटैगोर, अनुवाद-, www.hindisamay.com/content/205/1/अज्ञेय-द्वारा-अनुदित-उपन्यास-गोरा.cspix

२२:- रंगभूमि - प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, पृष्ठ संख्या - २३

२३:- तितली- जय शंकर प्रसाद,
<https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/2318> पृष्ठ सांख्य- 47 ।

२४:- रंगभूमि- प्रेमचंद, अध्याय -१,
<http://www.hindisamay.com/content/235/1/प्रेमचंद--उपन्यास-रंगभूमि.cspix>

२५:- तहरानी दीक्षित - हृदय का कांटा, किताब घर प्रकाशन, www.delhihomeshop.com

२६:- गोदान - प्रेमचंद, भाग - १,
<http://www.hindisamay.com/content/244/1/रचनाकार-प्रेमचंद--की-उपन्यास-गोदान.cspix>

२७:- प्रत्याग- वृंदावन लाल वर्मा, गंगा ग्रन्थागार ३६ लाटुर रोड- लखनऊ, पृष्ठ संख्या-११

२८:- कफ़न - प्रेमचंद, <http://www.hindisamay.com/content/919/1/रचनाकार-प्रेमचंद--की-कहानि-कफ़न.cspix>

२९:- तार्ई - विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक,

<http://www.hindisamay.com/content/358/1/विश्वंभरनाथ-शर्मा-कौशिक-कहानियाँ-तार्ईcspX>

३०:- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय", अज्ञेय रचनावली खंड : 3 संपूर्ण कहानियाँ अज्ञेय संपादन - कृष्णदत्त

पालीवाल,<http://www.hindikahani.hindikavita.com/MuslimMuslimBhaiBhaiAg yeya.php>

३१:-मिठाई.वाला-भगवती प्रसाद वाजपई., thelalantop.com,15/04/2016.11:39am

३२:- मंझली रानी - बिखरे- मोती कहानी संग्रह, सुभद्रा कुमारी चौहान, कृष्णा प्रेस - २६ हिवेट रोड, पृष्ठ संख्या -३१

३३:- www.pustak.org, भारतीय साहित्य संग्रह, भगवती चरण वर्मा।, राज कमल प्रकाशक।

३४:- यशपाल रचनावली, खण्ड-3 (झूठा सच, भाग-2 'देश का भविष्य') लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-540

३५:- गर्म राख - उपेंद्रनाथ अशक, नीलम प्रकाशन ग्रह इलाहाबाद-१, पृष्ठ संख्या-६

३६:- हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रेमलता भसीन, पृष्ठ संख्या-१४५

३७:- बूंद और समुद्र- अमृतलाल नागर, पृष्ठ.- 603 प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन।

३८:- बूंद और समुद्र- अमृतलाल नागर, पृष्ठ. 567 राजकमल प्रकाशन।

३९:- नागार्जुन page-07 राजकमल पेपरबेक्स।

४०:- कुंभीपाक- नागार्जुन, www.Pustak.org,कुंभीपाक/नागार्जुन।

४१:- देवी का बेटा - रांगेय राघव, [https://www.pustak.org/books/bookdetails/1408, devki ka beta, rangey Raghav](https://www.pustak.org/books/bookdetails/1408,devki%20ka%20beta,%20rangey%20Raghav)।

४२:- सूखा बरगद - मंजूर एहतेशाम , राजकमल प्रकाशक , पृष्ठ संख्या - ५५।

४३:- होली का मजाक- यशपाल,

www.hindisamay.com,<http://www.hindisamay.com/content/424/1/यशपाल-कहानियाँ-होली-का-मजाक.cspX>

४४:- मकरील-यशपाल,
www.hindisamay.com,http://www.hindisamay.com/content/2363/1/यशपाल
-कहानियाँ-मकरील.cspcx)

४५:- विपथगा- अज्ञेय, रचनावली खंड -३ सम्पूर्ण कहानियाँ, संपादन-कृष्णदत्त
पालीवाल,www.hindisamay.com,http://www.hindisamay.com/content/934/9/
अज्ञेय-सच्चिदानंद-हीरानंद-वात्स्यायन-AGEY-रचनावली-अज्ञेय-रचनावली-खंड-3संपूर्ण-कहानियाँ-
संपादन-कृष्णदत्त-पालीवाल-निवेदन.cspcx

४६:-शिक्षा-अज्ञेय, रचनावली खंड-३सम्पूर्ण कहानियाँ, संपादन-कृष्णदत्त पालीवाल,
www.hindisamay.com,http://www.hindisamay.com/content/934/39/अज्ञेय-
सच्चिदानंद-हीरानंद-वात्स्यायन-AGEY-रचनावली-अज्ञेय-रचनावली-खंड-3संपूर्ण-कहानियाँ-
संपादन-कृष्णदत्त-पालीवाल-निवेदन.cspcx

४७:-अभिशापित-अज्ञेय, रचनावली खंड -३ सम्पूर्ण कहानियाँ, संपादन-कृष्णदत्त
पालीवाल,www.hindisamay.com,http://www.hindisamay.com/content/934/9/
अज्ञेय-सच्चिदानंद-हीरानंद-वात्स्यायन-AGEY-रचनावली-अज्ञेय-रचनावली-खंड-3संपूर्ण-कहानियाँ-
संपादन-कृष्णदत्त-पालीवाल-निवेदन.cspcx

४८:-रेल की रात- इला चन्द्र जोशी,
http://www.hindisamay.com/content/2244/1/इलाचंद्र-जोशी-कहानियाँ-रेल-की-
रात.cspcx)

४९:- डाची-उपेन्द्रनाथ अशक,
http://www.hindisamay.com/content/2435/1/रचनाकार-उपेंद्रनाथ-अशक-की-कहानि
-डाची.cspcx

५०:- मेरा वतन,विष्णु प्रभाकर,
http://www.hindisamay.com/content/324/1/रचनाकार-विष्णु-प्रभाकर-की-कहानि-
मेरा-वतन.cspcx

५१:- नन्हों-शिवप्रसाद सिंह, http://www.hindisamay.com/content/2351/1/रचनाकार
-शिवप्रसाद-सिंह-की-कहानि-नन्हों.cspcx

५२:- गरीबों की बस्ती , मार्कडेय,
http://www.hindisamay.com/content/746/1/रचनाकार-मार्कडेय-की-कहानि-गरीबों-
की-बस्ती.cspcx

५३:- लाल पान की बेगम, फणीश्वरनाथ रेणु,

<http://www.hindisamay.com/content/43/1/रचनाकार-फणीश्वरनाथ-रेणु-की-कहानि-लाल-पान-की-बेगम.csp>

५४:- पुष्प पाल सिंह-मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक, Posted On May - 19 - 2012,

<https://www.dainiktribuneonline.com/2012/05/विभाजन-की-विभीषिका-का-मान/>

५५:-राजेन्द्र यादव-प्रतीक्षा कहानी,

<https://www.pustak.org/books/bookdetails/6429>

५६:-कितने पाकिस्तान- कमलेश्वर,

<http://www.hindisamay.com/content/1008/1/रचनाकार-कमलेश्वर-की-कहानि-कितने-पाकिस्तान.csp>

५७:- मन्मू भंडारी- यहीं सच है,

<http://www.hindisamay.com/content/9398/1/रचनाकार-मन्मू-भंडारी-की-कहानि-यहीं-सच-है.csp>

५८:-सिक्का बदल गया-कृष्णा सोबती,

<http://www.hindisamay.com/content/171/1/रचनाकार-कृष्णा-सोबती-की-कहानि-सिक्का-बदल-गया.csp>

५९:- चाल,रवींद्र कालिया, <http://www.hindisamay.com/content/1074/1/रवींद्र-कालिया--कहानियाँ-चाल.csp>

६०:- परदेशी, ममता कालिया, <http://www.hindisamay.com/content/1153/1/ममता-कालिया-कहानियाँ-परदेशी.csp>

६१:- रमज़ान में मौत- मंजूर एहतेशाम, श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ १९७०-१९८०, पृष्ठ संख्या- १०४, संपादक - स्वयं प्रकाश, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि., 5 - ई., रानी झांसी रोड, झंडेवालान, नई दिल्ली-55